कन्या लग्नफल

अनुक्रमणिका

1.	पुस्तक परिचय	7
2.	लेखक परिचय	10
3.	ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व	11
4.	लग्न प्रशंसा	18
5.	लग्न का महत्त्व	19
6.	जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं	20
7.	लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व	22
8.	कन्यालग्न–एक परिचय	27
9.	कन्यालग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण	29
10.	कन्यालग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में	33
11.	कन्यालग्न के स्वामी बुध का वैदिक स्वरूप	35
12.	कन्यालग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप	37
13.	बुध का खगोलीय स्वरूप	44
14.	कन्यालग्न की चारित्रिक विशेषताएं	46
15.	नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी	55
16.	कन्यालग्न पर अंशात्मक फलादेश	61
17.	कन्यालग्न और आयुष्य योग	81
18.	कन्यालग्न और रोग	84
19.	कन्यालग्न और धन योग	88
20.	कन्यालग्न और विवाह योग	93
21.	कन्यालग्न एवं संतान योग	97
22.	कन्यालग्न और राज योग	100
23.	कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति	103
24.	कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति	120
25.	कन्यालग्न में मंगल की स्थिति	137

26.	कन्यालग्न में बुध की स्थिति	151
27.	कन्यालग्न में गुरु की स्थिति	165
28.	कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति	180
29.	कन्यालग्न में शनि की स्थिति	193
30.	कन्यालग्न में राहु की स्थिति	208
31.	कन्यालग्न में केतु की स्थिति	221
32.	बुधवार व्रत कथा	234
33.	बुध के वैदिक, पौराणिक एवं तांत्रिक मंत्र	237
34.	कन्यालग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन	242
35.	बुध अनिष्ट से बचने हेतु लालकिताब के वर्णित टोटके	244
36.	दृष्टांत कुण्डलियां	245

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को 'बीज' कहा जाता है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन अर्थात् विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दिया परंतु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति व व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में रखा गया है। लग्न बारह है, ग्रह नौ हैं, फलतः 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनी। प्रत्येक ग्रह की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में अभी तक नहीं हुआ वह है–'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।' वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया, इसलिए फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा का कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह की युति होने पर, उसका भी विचार यहां किया गया है। इस प्रकार

से 108 ग्रह स्थितियों को पुन: नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाए तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्विग्रह **स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्विग्रह युतियां बनेंगी। ग्यारह हजार छ: सौ चौसठ प्रकार की द्विग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

हम एक छोटा सा उदाहरण **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मी योग'** से ले सकते हैं। क्या गुरु+चंद्र की युति से बना गजकेसरी योग सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी! गजकेसरी योग का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा। गजकेसरी योग की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनती है। अकेला गजकेसरी योग 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकरलग्न'** या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि **मकरलग्न में गजकेसरी योग** छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जाएगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अत: यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि उन्होंने फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पाराशर लाइट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एवं **'कर्कलग्न'** की पुस्तकें अक्टूबर में, तथा **'वृषलग्न'** एवं **'तुलालग्न'** नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह 'कन्यालग्न' की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। कन्यालग्न में महात्मा गौतम, मोरारी बापू, महात्मा यीशू, ज्योति बसु, बादशाह शाहजहां, रामविलास पासवान, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण, शैख मुजीबर्रहमान, किरण बेदी, शेयर किंग हर्षद मेहता, मोहम्मद अजहरूदीन, सचिन तेंदुलकर जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। कन्यालग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। कन्यालग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री से लेकर तीस (30°) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हो, फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुंडली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्मलग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल रूप से इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला कदम सार्थक होगा।**

डॉ. भोजराज द्विवेदी

20.01.2004

लेखक परिचय

4 सितम्बर 1949 को "कर्कलग्न" के अंतर्गत जन्में डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 250 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्ण पदक व सैकड़ों मानद उपाधियां अनेक सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाये जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि युग पुरुष के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेद भगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योंति: शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंद: पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्चते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ समीक्षा, पृ 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम्
   –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1

संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवें[1] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? फसलें कैसी होंगी। वगैरह-वगैरह। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल एवं मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।
यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[2]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणारहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोश के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

---

1. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्-तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1
2. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
3. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोश-1929, पृ. सं. 536
4. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र है। अमरकोश की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[1]

हलायुधकोश में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[2]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[3]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[4] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[5]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है।

---

1. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550
2. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
3. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
5. वैदिक सम्पत्ति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
6. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते ॥-पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42

तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[1] इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[2]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
ऊषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[3]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[4]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[5]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है वह जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं,

---

1. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3
2. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालयं पूना, पृष्ठ1
3. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
4. जातकसार दीप-चन्द्रशेखरन् (पृष्ट 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
5. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहाय: पुरुषाणामापदर्णवे पोत:।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपर:।।5।।[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते है कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[4] **अत: जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनाधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा में इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली पृष्ठ 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/24
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्या यथा नभ:।
   तथा सांवत्सरो राजा भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि।। बृहत्संहिता, अ.1 24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो बरसात तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती हैं पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य को सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह हैं कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उस ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30।

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है। इस दिव्य-ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय(काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरण देता है।[1]

मेरे निजी शब्दों में **'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'**

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

1. वक्री ग्रह-(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमय: सिंहो यथा चित्रमयो नृप:।
   तथा वेदावधीतोपिज्योतिषशास्त्रेण बिना द्विजा:।।-वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देव: प्रभु: स्वामी लग्नं ज्योतिं: परं मतम्।

लग्नं दीपो महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरु:॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिर्थिन च नक्षत्रं न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपा:॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दु: सर्वत्र बीजाम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावा: स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

लग्नवीर्य विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

ज्योतिविवरण में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं॥8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए॥9॥

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राज ज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो **मेषलग्न** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता **वृषभलग्न**।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआ और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न**
मकरलग्न मन्द बुदि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendant) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक 'समय' विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि 'लग्न' का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

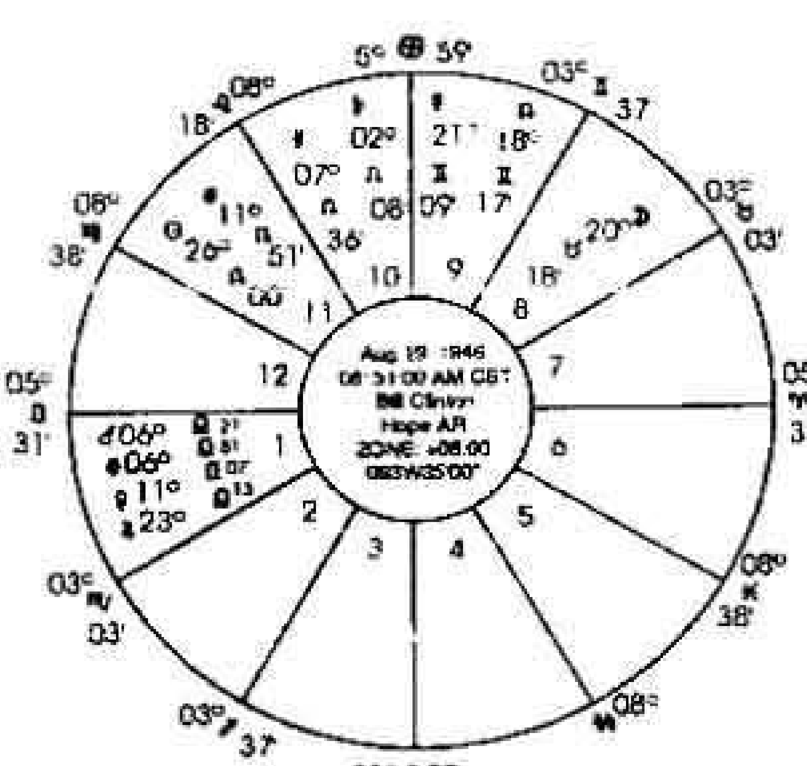

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का भाग देने

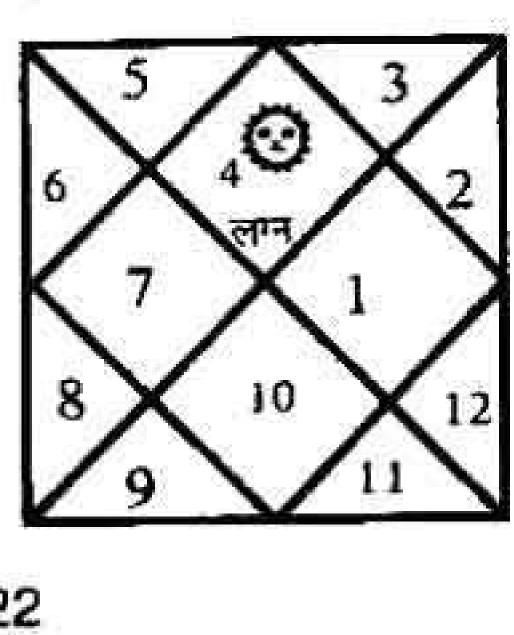

पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही 'द्वादश घर' या 'बारह भाव' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे 'लग्न' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

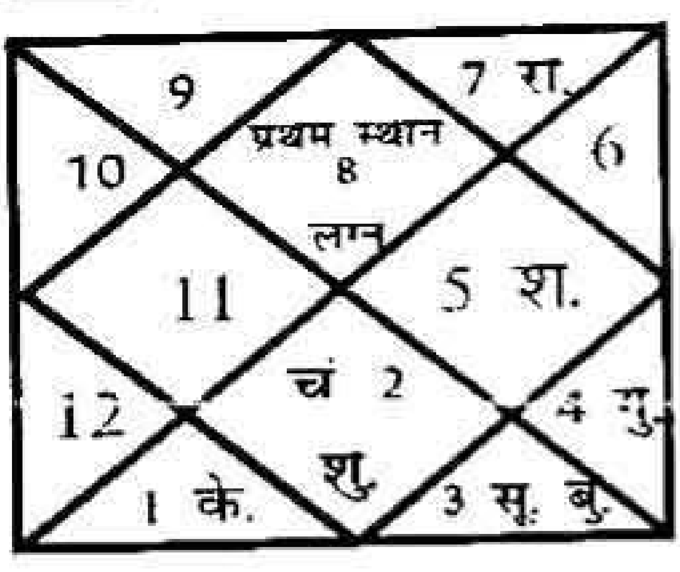

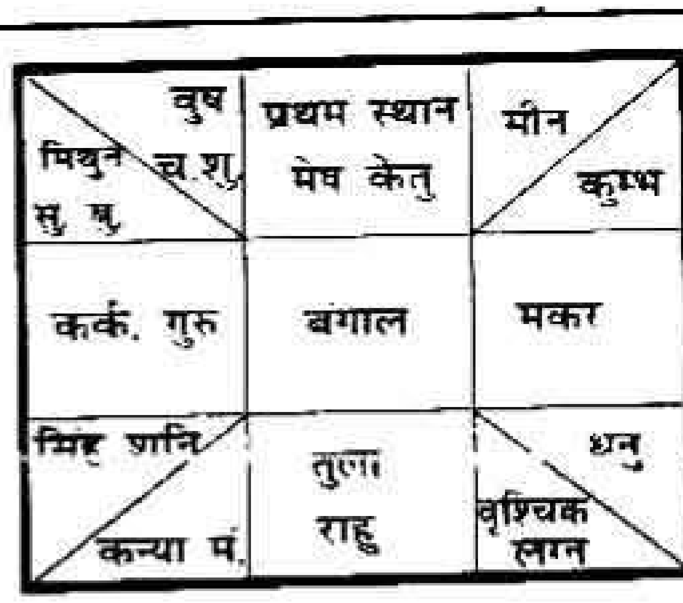

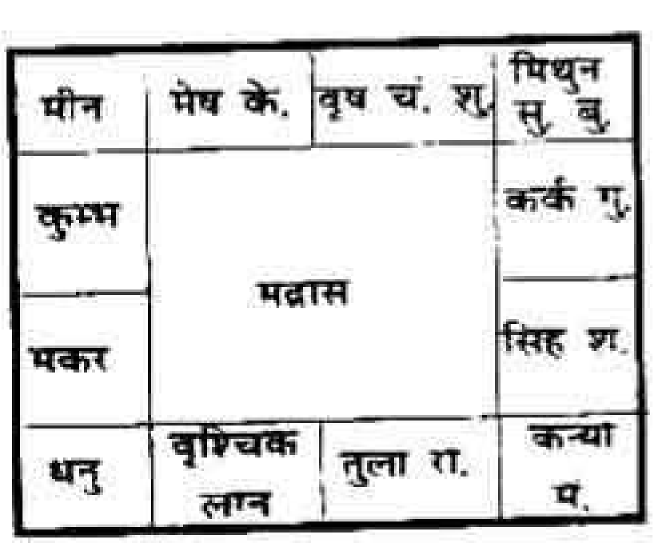

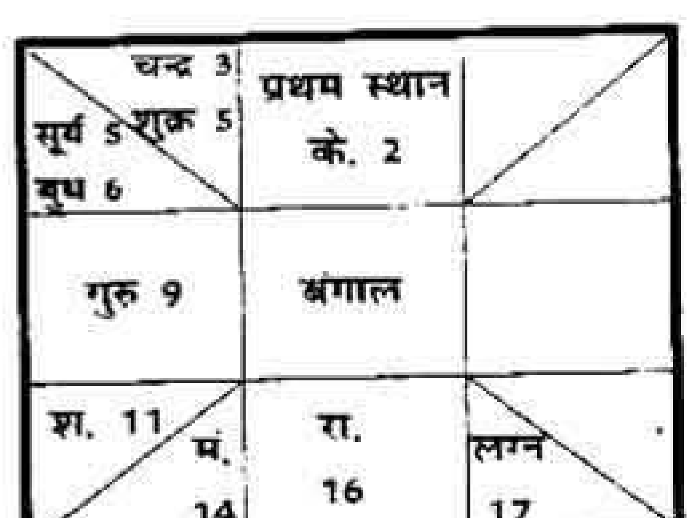

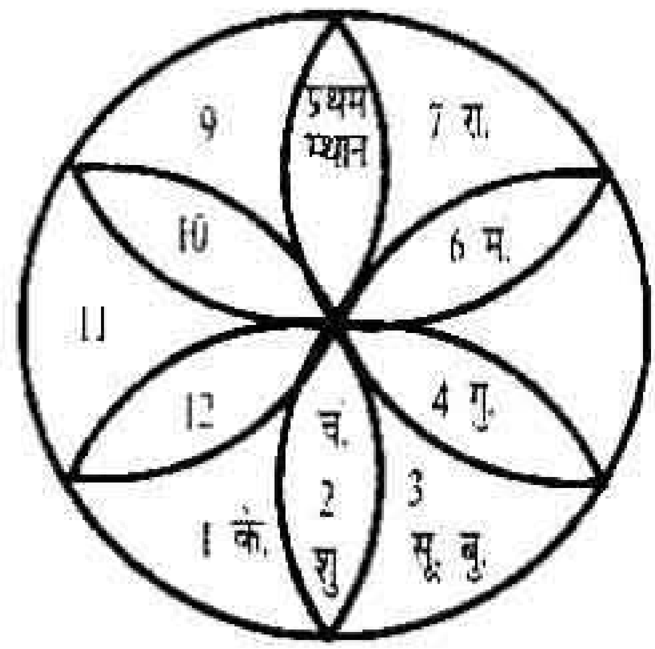

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। 1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का विशेष महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका. निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने 'लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगांनि' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

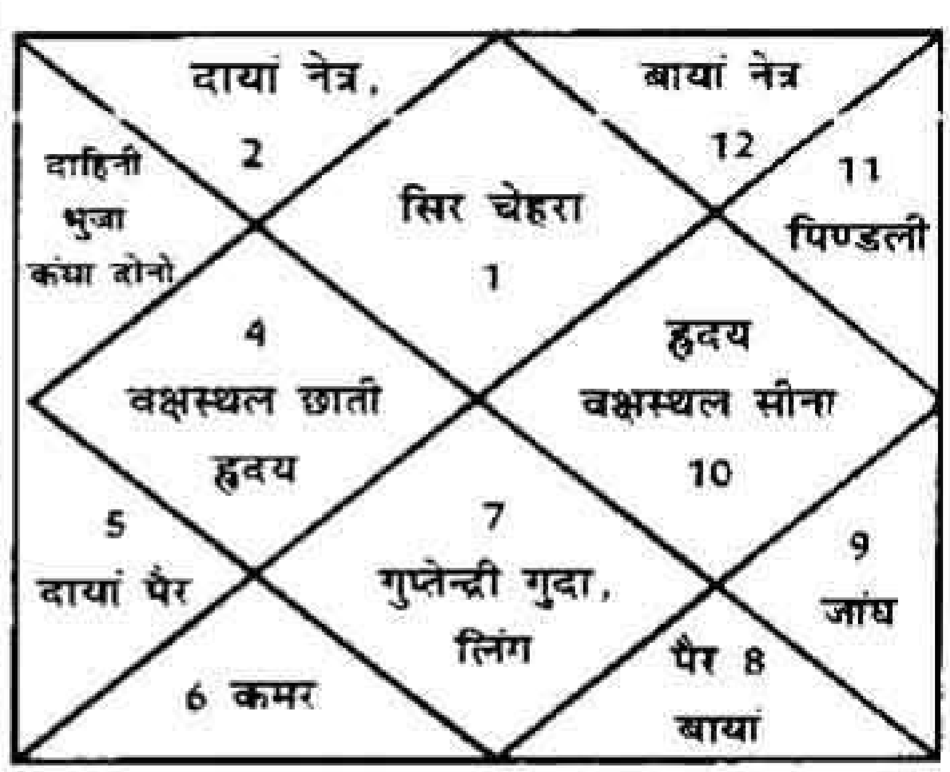

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **'ज्योतिष और आकृति विज्ञान'** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा. यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली

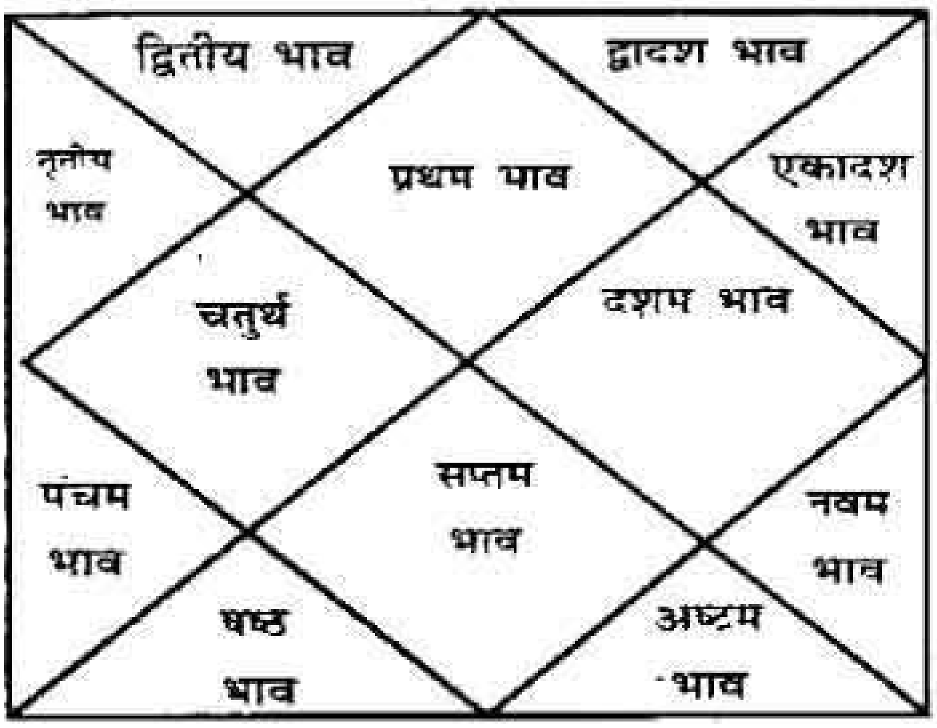

पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

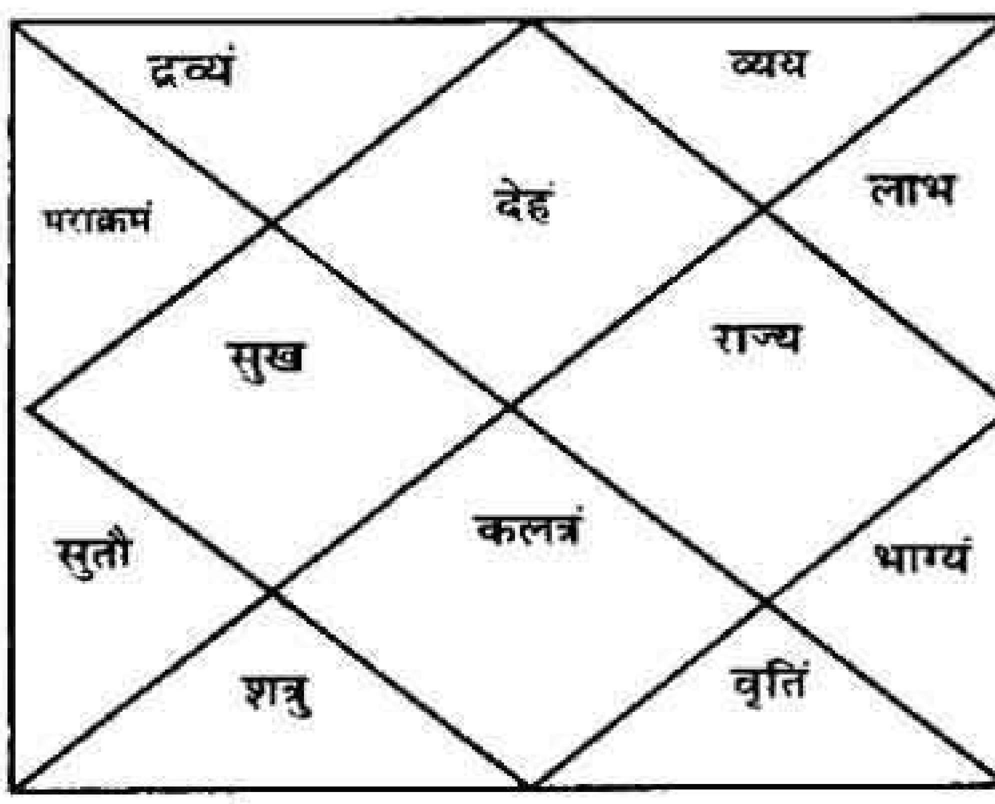

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

कन्यालग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, राज्येश	-	बुध
2.	धनेश, भाग्येश	-	शुक्र
3.	पराक्रमेश, अष्टमेश	-	मंगल
4.	सुखेश, सप्तमेश	-	गुरु
5.	पंचमेश, षष्ठेश	-	शनि
6.	लाभेश	-	चंद्र
7.	खर्चेश	-	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	-	5-शनि, 9-शुक्र
9.	दु:स्थान के स्वामी	-	6-शनि, 8-मंगल, 12-सूर्य
10.	केन्द्राधिगति	-	1-बुध, 4, 7-गुरु, 10-बुध
11.	पणकर के स्वामी	-	2-शुक्र, 5-शनि, 8-मंगल, 11-चंद्र
12.	आपोक्लिम	-	3-मंगल, 6-शनि, 9-शुक्र, 12-सूर्य
13.	त्रिकेश	-	6-शनि, 8-मंगल, 12-सूर्य
14.	उपचय के स्वामी	-	3-मंगल, 6-शनि, 10-बुध, 11-चंद्र
15.	शुभ योग	-	1. शुक्र मध्य योग, 2. बुध (बुध+शुक्र) 3. अतिशुभकारक-बुध
16.	अशुभ योग	-	1. मंगल, 2. गुरु, 3. चंद्र, 4. शनि
17.	निष्फल योग	-	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि
18.	सफल योग	-	1. बुध+शुक्र, 2. बुध+शनि सदोष
19.	राजयोगकारक	-	गुरु, शुक्र, शनि मिश्रित
20.	मारकेश	-	मुख्य मारक शुक्र

21. **पापफलद** चंद्र शनि, परमपापी-मंगल

विशेष-कन्यालग्न के लिए लग्नेश बुध की स्थिति ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। शनि त्रिकोणाधिपति होते हुए भी षष्ठेश है। अतः मिश्रित फलदायक है। मुख्य मारकेश शुक्र है। जो सहचर्य से शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के फल देता है।

❑❑❑

कन्यालग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

कुजजीवेन्दव: पापा एक एव भृगु: शुभ:।
भार्गवेन्दु सुतावेव (देव) भवेतां योगकारकौ।।22।।
निहन्ता कविरन्ये तु (अपि) मारकास्तु कुजादय:।
प्रतीक्षेत फलान्युक्तान्येवं कन्याभवे बुधै:।।23।।

दूसरा पाठ

पापासितेन्दु गुर्वारभाग्येशो भार्गव: शुभ:।
राजयोगकर: सौम्यो भृगुपुत्रसमन्वित:।।24।।
न हन्ति रविरन्ये तु मारकाख्या कुजादय:।
घ्नन्ति पापा: शुभान्यूहमान्यंवं कन्याभवां बुध।।25।।

तीसरा पाठ

कुजजीवेन्दव: पापा एको भृगुसुत: शुभ:।
राजयोगकर: सौम्यो भृगुपुत्रसमन्वित:।।25।।
न हन्ति रविरन्ये तु मारकाख्या: कुजादय:।
घ्नन्ति पापा: शुभान्यूहमान्यंवं कन्याभूवां बुधे:।।25।।

कुछ प्रतियों में 'भार्गवेन्दुसुतौद्वौच', 'सुतावेव' की जगह 'सुतादेव', 'निहन्ता' की जगह 'न हन्ता' ऐसा पाठान्तर है।

पहला पाठ:–मंगल तृतीयेश और अष्टमेश होता है इसलिए, गुरु चतुर्थेश और बलवान मारक स्थान का (सप्तम स्थान का) स्वामी होता है। इसलिए, चंद्रमा एकादश

स्थान का स्वामी होता है। इसी कारणवश यह ग्रह अशुभ फल देते हैं। अकेला शुक्र बलवान नवम स्थान का स्वामी होता है इसलिए ग्रंथकार ने इसे राजयोग का स्थान दिया। शुक्र के साथ बुध हो तो योगकारक होते हैं। शुक्र यदि प्रथम मारक स्थान का (द्वितीय स्थान का) अधिपति हो फिर भी वह स्वयं मारक नहीं होता। मंगल आदि करके जो पाप ग्रह कहे हुए हैं वे मारक होते हैं। इस प्रकार कन्यालग्न के शुभाशुभ ग्रहों का विवेचन हुआ।

दूसरा पाठ–शुक्र धनेश (प्रथम मारक स्थान) होता है इसलिए, चंद्रमा एकादश होता है। इसलिए, गुरु बलवान मारक स्थान का (सप्तम स्थान का) अधिपति और चतुर्थ केन्द्र इन दो केन्द्रों का स्वामी होता है, और मंगल तृतीय और अष्टम स्थानों का अधिपति होता है इसलिए, ये ग्रह अशुभ फल देते हैं। रवि व्ययेश होता है इसलिए स्वयं मारक नहीं बनता। शुक्र राजयोग कारक होता है। बुध लग्नेश और दशमेश होने से बुध-शुक्र की युति राजयोग कारक होती है। मंगल आदि अशुभ फल कारक होते हैं। इस प्रकार कन्यालग्न के शुभाशुभ फल कहे।

तीसरा पाठ–कन्यालग्न हो तो मंगल, गुरु और चंद्रमा अशुभ फल देते हैं। अकेला शुक्र शुभ फल देता है। यदि बुध-शुक्र योग हो तो वह राजयोग कारक है। रवि स्वयं मारक नहीं बनता। मंगल आदि करके अशुभ ग्रह मारक बनते हैं। कन्यालग्न में जन्म हो तो ज्ञातियों ने इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना।

स्पष्टीकरण–'न हन्ता' व 'निहन्ता' इन शब्दों के कारण कुछ विद्वानों के मत में शुक्र द्वितीयेश होने से मारक बनता है। और कुछ में 'शुक्र' मारक होने पर भी (नवमेश होने के कारण से) मारक नहीं बनता। शनि पंचम स्थान का स्वामी है परन्तु षष्ठम स्थान का भी स्वामी होने से दूषित है।

मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है और वह इस लग्न के लिए तृतीय और अष्टम स्थानों का स्वामी होने से पाप ग्रह माना गया है। गुरु और चंद्रमा शुभ ग्रह हैं। परन्तु उन्हें वहां पर अशुभ फल देने वाले कहा है। चंद्रमा एकादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ है और गुरु चतुर्थ तथा सप्तम केन्द्रों का स्वामी होने से मारकेश भी है और इसलिए वह अशुभ फल देने वाला है। गुरु मात्र सप्तम केन्द्र का स्वामी होने से इस लग्न के लिए निश्चय ही मारक बनता है। इसमें संदेह नहीं है। ग्रंथकार ने एक जगह शुभ फलदायक कहा है और तुरन्त ही बाद में निहन्ता कविः ऐसा कहा है, इस पर से ऐसा मालूम पड़ता है कि शुक्र नवम (भाग्य भवन) का अधिपति होने से शुभ फल देने वाला माना है। किन्तु बाद में विचार के अंत में ग्रंथकार ने ऐसा भी कहा है कि गुरु द्वितीय (मारक) स्थान का स्वामी होने से मारक बनता है। इस पर से तात्पर्य इस प्रकार निकलता है कि शुक्र अपनी दशान्तर्दशा में अशुभ फल नहीं

देगा। परन्तु यदि वह पाप ग्रह युक्त हो तो अशुभ फल देने में चूकेगा नहीं। अन्यथा वह शुभ फल देने वाला है।

यहां लग्न की कन्या राशि का अधिपति बुध और द्वितीय स्थान की राशि तुला का अधिपति शुक्र इन दोनों का स्थानाधिपति के नाते और उसी प्रकार नवम स्थान की राशि वृषभ का स्वामी शुक्र और दशम स्थान की राशि मिथुन का स्वामी बुध इन दोनों ग्रहों का साहचर्य योग उत्तम प्रकार का योग मानकर वे संबंध करें तो राजयोग माना जायेगा, और वे एक दूसरे की दशान्तर्दशा में उत्तम फल प्रदान करेंगे इसमें संदेह नहीं है।

रवि और शनि के सम्बन्ध में यहां पर कुछ भी उल्लेख नहीं है जिसके कारण वे खास शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले प्रतीत नहीं होते हैं, क्योंकि शनि पंचम स्थान का स्वामी होकर षष्टम स्थान का स्वामी भी है अर्थात् (सदोष) है और रवि द्वादश स्थान का स्वामी होने से दूसरे ग्रहों के साहचर्य से फल देने वाला है इसलिए इन दोनों ग्रहों का कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया है।

कन्यालग्न को राजयोग करने के लिए पूर्ण निर्दोष ऐसा कोई भी ग्रह नहीं है। उदाहरणार्थ–रवि व्ययेश, चंद्रमा एकादशेश, मंगल तृतीयेश और अष्टमेश, बुध लग्नेश और दशमेश (दो केन्द्रों का स्वामी होने से), गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश (मारकेश) इन दोनों केन्द्रों का स्वामी होने से, शुक्र धनेश (प्रथम मारक स्थान का स्वामी) होने से और शनि षष्ठेश होने से दोषयुक्त हैं इनमें से मंगल, शनि और चंद्रमा त्रिषडायपति हैं। शुक्र और गुरु मारक स्थान के अधिपति हैं इसलिए ग्रंथकार ने अनिच्छुकता से (नाई लाज वश होकर) बुध को लेकर ऊपर कहे अनुसार शुक्र का उत्तम योग-राजयोग कहा।

दूसरे पाठ के 25वें श्लोक में गलती मालूम पड़ती है, जिसका कारण 'र' को 'क' की जगह गलती से लिखा गया दिखाई देता है।

कन्यालग्न के लिए शुभाशुभ योग–

1. **शुभ योग**–शुक्र नवम स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला होता है। (वह द्वितीय मारक स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला होता है) यह मध्य-योग है।
2. **शुभ योग**–लग्नाधिपति बुध और द्वितीय स्थान का स्वामी शुक्र और नवम स्थानाधिपति शुक्र और दशम स्थानाधिपति बुध इन दोनों के सह स्थान और

साहचर्य योगों के कारण (सामान्य केन्द्राधिपत्य दोष होते हुए भी) राजयोग कारक होने से शुभ फलदायक है।

कन्यालग्न के लिए अशुभ योग–

1. **अशुभ योग**–मंगल स्वयं पाप ग्रह होकर श्लोक 6 के अनुसार तृतीय और अष्टम स्थानों का स्वामी होने से अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।
2. **अशुभ योग**–गुरु चतुर्थ और सप्तम केन्द्रों का स्वामी होने से श्लोक 7 और 10वें के अनुसार बलवान् केन्द्राधिपतित्व दोष के कारण और सप्तम-कारक स्थान का भी स्वामी होने से अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला होता है।
3. **अशुभ योग**–चंद्रमा एकादश स्थान का अधिपति होकर श्लोक 6 के अनुसार अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला होता है।
4. **अशुभ योग**–शनि पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होकर स्वयं पाप ग्रह है और षष्ठ स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है।

निष्फल योग–1. गुरु-शुक्र, 2. गुरु-शनि, (दोनों ही ग्रह दूषित होते हैं।)

सफल योग–2. बुध-शुक्र, 2. बुध-शनि (सदोष), शनि दूषित होने से सदोष राजयोग है परन्तु श्लोक 15 के अनुसार एक ही ग्रह दूषित हो तो राजयोग में बाधा नहीं पहुंचती।

❑❑❑

कन्यालग्न की प्रमुख विशेषताएं
एक नजर में

1.	लग्न	–	कन्या
2.	लग्न चिह्न	–	हाथ में धान व अग्नि लिए हुए कुंवारी कन्या
3.	लग्न स्वामी	–	बुध
4.	लग्न तत्त्व	–	पृथ्वी तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	–	दक्षिण
7.	लग्न लिंग व गुण	–	स्त्री
8.	लग्न जाति	–	वैश्य
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	सौम्य स्वभाव, वात प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	उदर (पेट)
11.	जीवन रत्न	–	पन्ना
12.	अनुकूल रंग	–	हरा
13.	शुभ दिवस	–	बुधवार, रविवार
14.	अनुकूल देवता	–	गणपति
15.	व्रत, उपवास	–	बुधवार
16.	अनुकूल अंक	–	5
17.	अनुकूल तारीखें	–	5/14/23
18.	मित्र लग्न	–	मेष, मिथुन, सिंह, तुला

19.	शत्रु लग्न	–	कर्क
20.	**व्यक्तित्व**	–	दोहरा व्यक्तित्व, विद्वान, युद्ध भीरु, आलोचक, लेखक
21.	**सकारात्मक तथ्य**	–	निरन्तर क्रियाशीलता, व्यावहारिक ज्ञान
22.	**नकारात्मक तथ्य**	–	अति छिद्रान्वेषी, बुराई ढूंढ़ना, कलह प्रियता, अशुभ चिन्तन, नपुंसकता

❑❑❑

कन्यालग्न के स्वामी बुध का वैदिक स्वरूप

बुध ग्रह सूर्य का अति समीपस्थ ग्रह है। यह ग्रहों में सबसे छोटा ग्रह है। यह सूर्य से 27 अंश से अधिक दूर कभी नहीं जाता। चंद्रमा की तरह बुध की भी कलाओं में क्षय व वृद्धि होती है। यह एक वर्ष में लगभग 6 बार उदित एवं अस्त होता है। उदित होने पर यह 21 से 43 दिनों तक दिखायी देता है। ग्रह लाघव के अनुसार बुध पूर्व दिशा में अस्त होने के 32 दिन बाद पश्चिम में उदित होता है तथा उसके 32 दिन बाद वक्री होता है। उसके 3 दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है, उसके 16 दिन बाद पूर्व में उदित होता है, उसके 3 दिन बाद मार्गी और उसके 32 दिन बाद पूर्व में अस्त हो जाता है। इस प्रकार मध्यम मान से 118 दिनों में इसके उदयास्त का एक चक्र पूरा होता है।

अथर्ववेद के एक मंत्र में बुध का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है–

सोमस्यांशो युधां पतेऽनूनो नाम वा असि।
अनून दर्श मा कृधि प्रजया च धनेन च॥

अर्थात् हे सोम के अंश बुध! तुम वीरों के पालनकर्त्ता हो। तुम दर्शन योग्य हो। हव्यादि देकर तुम्हें प्रसन्न करता हुआ मैं पुत्रादि धन से युक्त होऊं।

'सोमस्यांशो' पद का भाष्य करते हुए आचार्य सायण ने सोम पुत्र बुध कहा है। इसमें बुध को दर्शनीय तथा अनून कहा गया है तथा बुध ग्रह को भावी युद्ध में विजय का शुभ प्रतीक माना गया है। बुध ग्रह को धन, समृद्धि और संतान वृद्धि का कारक माना गया है।

पंचविंशति ब्राह्मण के एक संदर्भ में बुध ग्रह को सौमायन (सौम्य) कहा गया है। **बुधो हि सौमायन: प्रोक्त:।** (पंचविंशतिब्राह्मण 24/18/6)

बुध को रोहिणेय तथा सौम्य भी कहा गया है। वैदिक काल में किसी समय जब चंद्रमा ने रोहिणी नक्षत्र के पास स्थित बुध को ढक दिया होगा तथा ऋषियों

ने रोहिणी एवं बुध दोनों को चंद्र बिम्ब से बाहर निकलते देखा होगा तभी से बुध को रोहिणी एवं चंद्रमा का पुत्र कहना प्रारम्भ किया होगा।

यजुर्वेद 18/61 का मंत्र प्राचीन काल में बुध के पूजन, हवन एवं शांतिकर्म में प्रयोग होता रहा है। इसमें बुध को बुद्धि का प्रतीक माना गया है। कालान्तर में ज्योतिष ग्रंथों में बुध को बुद्धि ही कहा गया है। मंत्र इस प्रकार है–

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठापूर्ते स सृजेथामयं च।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्॥

अर्थात् हे अग्ने (ग्रह), तुम जागो। तुम बुद्धिमान् होकर इस अभीष्ट पूर्ति वाले कर्म में यजमान से सुसंगत होओ। हे विश्वेदेव निमित्त कर्म करने वाला यह यजमान देवताओं के साथ रहने योग्य होता हुआ श्रेष्ठ स्वर्ग में चिरकाल तक रहे।

❑❑❑

कन्यालग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥

बुध पीले रंग की पुष्प माला और पीला वस्त्र धारण करते हैं। उनके शरीर की कान्ति कनेर के पुष्प जैसी है। वे अपने चारों हाथों में क्रमशः तलवार, ढाल, गदा और वर मुद्रा धारण किए रहते हैं। वे अपने सिर पर सोने का मुकुट तथा गले में सुन्दर माला धारण करते हैं। उनका वाहन सिंह है।

बुध की उत्पत्ति

अत्रि ऋषि के पुत्र चंद्र हुए उन्होंने एक बार देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण कर लिया था। इससे देवासुर संग्राम हो गया। अन्त में ब्रह्मा जी ने बीच में पड़ कर तारा को बृहस्पति को दिला दिया। गुरु ने तारा को गर्भवती पाया। उन्होंने अपने क्षेत्र में दूसरे का बीज देखकर तारा को गर्भस्राव करने की आज्ञा दी। तारा ने एक सुनहले अणु को गर्भ से बाहर निकाला। उस अण्डे से एक बालक का जन्म हुआ। वह अति सुन्दर था। उसे देखकर चंद्र और गुरु दोनों ही मोहित हो गये। यह किसका पुत्र है? तारा लज्जावश जब कुछ न कह सकी तो बालक ने मां की झूठी लज्जा से क्रोधित होकर उसे सत्य बोलने पर विवश किया। इस बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर ब्रह्मा जी ने उसका नाम बुध रख दिया। यह बुद्धिदाता रहेगा, ऐसा वरदान दिया। बालक को चंद्रमा को सौंप दिया गया। तब से बुध चंद्र पुत्र कहलाये। उनके जन्म के बाद उनकी प्रेरणा से भौतिक ज्ञान का उजागर करने वाली वेद विद्या अर्थववेद के रूप में प्रसिद्ध हुई। अर्थशास्त्र, गणित व विज्ञान कला कौशल व्यापार के सूत्र उसमें समाहित थे। इसी कारणवश बुध का सम्बन्ध व्यापार से बन गया।

अतः बुध सौम्य ग्रह कहलाया व शुभ ग्रह माना गया है। यह गुरु, चंद्र व तारा तीनों के मिश्रण का स्वरूप है। गुरु का रंग पीला, चंद्र का सफेद व तारा का लाल

था, अतः इनके मिश्रण से इस ग्रह का रंग दूर्वादल श्याम हरा रंग बना। वास्तव में वात, पित्त और कफ का मिश्रण बुध है। यह कल्पना इसमें रूपात्मकता से दी गई है। गुरु का क्षेत्र और चंद्र का वीर्य होने से यह दोनों से शत्रुता रखने वाला ग्रह बना। साथ ही अन्य क्षेत्र में उत्पन्न होने से यह वर्ण संकर अर्थात् नपुंसक ग्रह कहलाया ऐसा गीता में कहा गया है।

अथर्ववेद के अनुसार बुध के पिता का नाम चंद्रमा और माता का नाम तारा है। ब्रह्माजी ने इनका नाम बुध रखा, क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी गम्भीर थी। श्रीमद्‌भागवत के अनुसार ये सभी शास्त्रों में पारंगत तथा चंद्रमा के समान ही कान्तिमान हैं। मत्स्य पुराण (24/1/2) के अनुसार इनको सर्वाधिक योग्य देखकर ब्रह्मा जी ने इन्हें भूतल का स्वामी तथा ग्रह बना दिया।

महाभारत की एक कथा के अनुसार इनकी विद्या-बुद्धि से प्रभावित होकर महाराज मनु ने अपनी गुणवती कन्या इला का इनके साथ विवाह कर दिया। इला और बुध के संयोग से महाराज पुरुरवा की उत्पत्ति हुई। इस तरह चंद्र वंश का विस्तार होता चला गया।

श्रीमद्‌भागवत (4/22/13) के अनुसार बुध ग्रह की स्थिति शुक्र से दो लाख योजन ऊपर है। बुध प्रायः मंगल ही करते हैं। किन्तु जब यह सूर्य की गति का उल्लंघन करते हैं, तब आंधी-पानी और सूखे का भय प्राप्त होता है।

मत्स्य पुराण के अनुसार बुध ग्रह का वर्ण कनेर के पुष्प की तरह पीला है। बुध का रथ श्वेत और प्रकाश से दीप्त है। इसमें वायु के समान वेग वाले घोड़े जुते रहते हैं। उनके नाम—श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि हैं।

बुध ग्रह के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है। इनकी महादशा 17 वर्ष की होती है।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए प्रत्येक अमावस्या को व्रत करना चाहिये तथा पन्ना धारण करना चाहिये। ब्राह्मण को हाथी दांत, हरा, वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस, भोजन तथा घृत का दान करना चाहिए। नवग्रह मण्डल में बुध पूजा ईशान कोण में की जाती है। इनका प्रतीक बाण है तथा रंग हरा है। इनके जप का वैदिक मंत्र—**'ओ३म उद्‌बुध्यास्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ् सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥'**, पौराणिक मंत्र **'प्रियकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥'** बीज मंत्र **'ओ३म ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।'** सामान्य मंत्र **ओ३म बुं बुधाय नमः।** इनमें से किसी का भी नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप की कुल

संख्या 9000 तथा समय 5 घड़ी दिन है। इसके लिए विशेष परिस्थितियों में विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

व्यापारी

नाना प्रकार के रसों का संग्रह करने वाला व्यक्ति व्यापारी होता है। यह भोजन के सभी रसों को बनाकर उनको स्नायुओं में संचालित करता है। अत: यह स्नायु मंडल का अधिकारी है। सुन्दर रस परिपाचक से त्वचा सुन्दर बनती है। अत: यह त्वचा पर पूर्ण अधिकार रखता है। इसकी मूलत: दो राशियां हैं। नकारात्मक राशि मिथुन और सकारात्मक राशि कन्या है।

राशि के प्रतीक स्वरूप मिथुन राशि में स्त्री पुरुष का जोड़ा बताया गया है और कन्या राशि में सुन्दर कन्या हाथ में ज्वाला लिए दिखाई गई है। मिथुन वायु तत्त्व प्रधान राशि है और कन्या पृथ्वी तत्त्व प्रधान है। अत: वायु और पृथ्वी का मिश्रण बुध है।

बुध का अधिकार क्षेत्र

वायु तत्त्व प्रधान बुध का प्रभाव स्कंध, फेफड़ा, ऊपरी पसली, कन्धे, हाथ, बाजू, स्वर अंग, श्वास नली व कोशिकाओं पर पड़ता है। तत्पश्चात् पृथ्वी तत्त्व से नाभिचक्र अग्नाशय, कमर मेरवला और आंतों पर प्रभाव होगा। बलवान बुध इनमें विकार नहीं आने देगा और बिगड़ा हुआ इनमें से भावानुसार कोई रोग देगा।

बुध के अधिकारियों में स्नायुतंत्र, जीभ, आंत, वाणी, नाक, कान, गला, फेफड़े आते हैं। नैसर्गिक कुण्डली में यह तीसरे और षष्ठम भाव का प्रतिनिधित्व करता है। बुध के बिगड़ने पर, उसकी विशोंतरी दशा में मस्तिष्क विकार, याददाश्त कमजोर होना, पक्षाघात, हकलाहट, दौरे पड़ना, सूंघने, सुनने और बोलने की शक्ति का ह्रास होता है।

खेलकूद, हंसी-मजाक इसके प्रिय क्षेत्र हैं। रेडियो, तार, टेलीफोन इसके अधिकारियों में हैं। इसकी मुख्य धातु पारा है। इसका शुभ रत्न पन्ना है तथा यह सदा कुमार ही रहता है। बाल्यावस्था पर इसका अधिकार है। सबसे छोटा ग्रह होने से इसे क्षुद्र ग्रह भी कहते हैं।

बुध का स्वरूप

मिथुन राशि के प्रतीक स्वरूप स्त्री पुरुषों का मिथुन चित्र है। यह दूर्वादल श्याम रंग का होता है अत: इसका गेहुआं रंग होता है। कन्या राशि के प्रतीक स्वरूप

अग्नि का अस्त्र भाण्ड हाथ में लिए नाव में बैठी कन्या का चित्र है। यह कन्या रूपवान तथा कुछ गौर वर्ण की है। मिथुन में कद लम्बा होता है क्योंकि यह पुरुष राशि है और कन्या में मझौला कद होगा। सामान्यत: चेहरा भरा हुआ, नेत्र काले और बालों में कुछ घुंघरालापन होगा। नाक, ऊंची, हाथ पैर लम्बे और दुबले होंगे। दोनों राशियों में ऊष्मा की कमी रहेगी व नेत्र आकर्षक होंगे। जातक सुन्दर व मतवाले होंगे। केश राशि आकर्षक घनी होगी।

कन्या राशि या लग्न वालों में स्त्री स्वभाव की झलक पाई जाती है। इसमें जन्म लेने वाले जातक दोनों दो विरोधी पक्षों से मेल रखने में माहिर होंगे। मीठा बोलकर अपना काम बनायेंगे। दोनों मनोरंजन के शौकीन, विलासी, प्रसन्न रहने वाले, कुछ मजाक करने वाला व चंचल मस्तिष्क वाले होंगे। बुध प्रधान व्यक्ति सिखावट में शीघ्र आने वाले होते हैं एवं सोहबत का असर भी इन पर शीघ्र होगा। ऐसे व्यक्ति दूसरों की भूलों को सूक्ष्मता से निकालने मे होशियार होंगे व सामने वाले की मंशा शीघ्र समझ जायेंगे।

मिथुन जातक का व्यक्तित्व विद्रोही होगा। जातक कठोर परिश्रमी होगा, साहसी होगा तथा जोखिम उठा सकेगा। इनका विचारने का तरीका तर्कसंगत व वैज्ञानिक होगा। जातक चतुर, चालाक, वाचाल व कुशल व्यापारी होगा। पठन-पाठन में जातक की रुचि भी रहेगी। जातक की मैकेनिकल कार्य में भी रुचि रहेगी।

कन्या में जन्मा जातक पराया धन, भवन, वाहन का लाभ पाएगा। जातक कुशाग्र बुद्धि व पढ़ने में होशियार होगा। विद्वता रहेगी। राजनीति में सफलता, मेडिकल लाईन, सामाजिक कार्य में रुचि रहेगी। यह भावुक ज्यादा होंगे। बिना सोचे समझे कार्य कर लेंगे। जातक की प्रकृति कोमल होगी। संकट में शीघ्र घबराने वाले प्रेम के क्षेत्र में असफल रहेंगे। पत्नी पक्ष से परेशान होंगे पुत्र संतान कम होगी। बुध प्रधान व्यक्ति दो विरोधियों पार्टियों में मेल रखने में माहिर होंगे।

बुध की बलवत्ता

कन्या मिथुन राशि में, कन्या मूल त्रिकोणी, बुधवार को, द्रेष्कोण तथा नवांश में स्वगृह में धनु राशि में (रवि के साथ न हो तो) रात को तथा दिन को विसुव के उत्तर में, तथा शनि के मध्य भाग में, लग्न में अकेला हो तो बली होता है। बली होने पर यश और बल की वृद्धि करता है। लग्न में दिग्बली होता है। हर्ष बली होता है। यह चतुर्थ व दशम भाव का कारक ग्रह है। मीन में नीच का होता है। सूर्य से 13 अंशों के भीतर अस्त भी होता है। प्राय: सूर्य बुध साथ ही देखे जाते हैं। अत: अस्त, वक्री और मार्गी बनता रहता है। इसकी राशि बदलने की अवधि 1 माह है। सूर्य, राहु, शुक्र इसके मित्र हैं। गुरु, मंगल, शनि सम हैं। चंद्र से इनकी शत्रुता है।

कन्या के 15 अंश तक मूल त्रिकोण में होने से ज्यादा बलवान रहता है तथा परमोच्च का कहलता है। मीन के 15 अंशों तक परम नीच रहता है। नीच होकर यदि यह वक्री हो तो शुभ फल देता है। प्रात: सूर्योदय के 2 घंटे तक बलवान रहता है।

विवेचन

यह राहु के दोष को दूर करता है। 'राहुदोष बुधो हन्यात्' प्रसिद्ध है। यह चौथे स्थान में विफल होता है। अत: चौथे भवन में बैठकर निर्बल हो जाता है। शुक्र से बुध की पराजय होती है। इसकी दृष्टि तिरछी है। वैसे सातवें तो देखता है ही पर अपनी एक राशि को देखते ही दूसरी राशि को भी देख लेता है। इसकी दृष्टि विशेष नहीं है। इसकी दिशा उत्तर मानी गई है।

ईशान कोण इसका निवास माना गया है। इसका घर बाण आकार का है। जन्मभूमि मगध देश है। इसके देवता विष्णु हैं। इसे प्रसन्न करने हेतु 'विष्णु सहस्र नाम' का पाठ श्रेष्ठ रहता है। यह यज्ञ और ज्ञान का अधिष्ठाता है। यह रजोगुणी, ब्राह्मण है क्योंकि अण्ड और जन्म यह दोनों अणुज द्विज हैं। 'दाम्यां जन्म संस्कारत् जायते इति द्विज' यह प्रसिद्ध है। यह यों तो सर्वदा बली माना गया है। यह शीघ्र फलदाता है। यह आयु के 32वें वर्ष में भाग्योदय करता है। मेष, सिंह, धनु इसकी शुभ राशियां हैं। वृष, कन्या, मकर साधारण तथा मिथुन, तुला, कुम्भ उत्तम, कर्क, वृश्चिक, मीन अशुभ राशियां हैं। बुध को दी हुई वस्तु शीघ्र नहीं आती है। बुध के दिन विद्या प्रारम्भ का निषेध है व किसी वस्तु को देना भी मना है। व्यापार प्रारम्भ की दृष्टि से बुध श्रेष्ठ है।

बुध के अचूक फल

- ❑ बुध अकेला किसी भाव में कम ही पाया जाता है। अत: इसके अकेले के फल के वर्णन मिलने कठिन हैं। क्योंकि बुध सूर्य या शुक्र प्राय: साथ में या आगे पीछे रहते हैं। अत: इनके परिप्रेक्ष्य में फल मिलते रहते हैं।
- ❑ लग्न में अकेला बुध शुभ फल करेगा, शुभ दृष्टि हो तो व्यापार से धनी बनायेगा (लग्न+कन्या+मिथुन)।
- ❑ सातवें भाव में अकेला बुध हो तो प्राय: नपुंसकता ही देगा चाहे शुभ दृष्टि ही क्यों न हो (लग्न कन्या, बुध) विवाह शीघ्र होगा।
- ❑ तीसरे भाव में बुध व्यक्ति को ज्योतिषी, डॉक्टर, लेखक और न्यायाधीश बनाता है (लग्न कर्क, कन्या, धनु)।

- यदि धन स्थान में बुध व तीसरे शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, सुन्दर हस्ताक्षर वाला, तीव्र स्मरणशक्ति वाला होगा। आयु के 24, 30, 36वें वर्ष में भाग्योदय होगा।
- चौथे बुध गु+शु+श के साथ हो तो उत्तम व्यापार व वाहन योग बनेगा। यदि राहु साथ हो तो जमीन योग निर्बल रहेगा।
- मिथुन लग्न में पाप प्रभावी बुध चर्म रोग देता है। सू+चं. के साथ हो तो।
- द्वितीयेश बुध का पाप प्रभाव घर से भागने की प्रवृत्ति को प्रबल करेगा।
- तृतीयेश बुध (लग्न, मेष, कर्क) हो तो पाप पीड़ित अकाल मृत्यु संभव है।
- अष्टमेश बुध (लग्न वृश्चिक, कुम्भ) सट्टे से धन दिलाने वाला हो तो निर्बल धन नाश होगा।
- मिथुन राशि में बुध तृतीय व भावेश पाप प्रभावी हो तो सांस की नली, दमा खांसी के रोग होंगे।
- कन्या राशि में बुध षष्ठ भाव भावेश पीड़ित हो तो कब्ज, टायफाईड, हर्निया, आंत्रशोध होंगे।
- तृतीयेश बुध के साथ हो तो कण्ठ रोग होगा।
- षष्ठेश और बुध लग्न में हो तो जातक गूंगा होता है।
- चंद्र+मंगल+बुध तीनों ग्रह राहु व शनि से पीड़ित हों तो कुष्ठ रोग होगा।
- चंद्र और बुध पाप प्रभावी हो तो पागलपन की संभावना रहेगी।
- शनि की राशियों में बुध या मंगल हो तो जातक हंसी दिल्लगी वाला होगा।
- बुध का गुरु से संबंध हो तो जातक हंसोड़ प्रवृत्ति प्रधान होगा।
- बुध के साथ चंद्र तथा चौथा भाव भी पीड़ित हो तो त्वचा रोग होगा।
- यदि धनेश वक्री हो बुध स्थान में दरिद्र योग बनेगा।
- केन्द्र में स्वगृही या उच्च का बुध हो तो भद्रयोग बनेगा। व्यक्ति धनी बनेगा।
- सातवें नीच का बुध हो तो जातक का विवाह देर से होगा।
- 5वें बुध (लग्न कर्क, वृश्चिक, मीन) प्रथम पुत्री हो बाद में पुत्र होगा (कुम्भ में संतान की कमी)।
- मेष, सिंह, धनु राशि में व्यक्ति को ज्योतिषी, गणितज्ञ, तत्त्वज्ञानी, इंजीनियर, वृष, कन्या मकर में होती पदार्थ, विज्ञान, हस्तरेखा मिथुन, तुला, कुम्भ

चिकित्सक व्याकरणी व्यापारी। कर्क, वृश्चिक, मीन में जातक टाइपिंग अंगूठे का विशेषज्ञ होगा।

- ❑ बुधादित्य योग–सरकारी नौकरी देना, शिक्षक या डॉक्टर, वकील बनायेगा। क्लर्क, बैंक में नौकरी की संभावना है।
- ❑ दशम भाव में बुध राशि 1, 5, 9 का हो तो जातक इंजीनियर, गणितज्ञ, क्लर्क, शिक्षक होगा। 2, 6, 10 व्यापारी, कमीशन एजेन्ट, ठेकेदार होगा। 3, 7, 12 समाचार सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक होगा।
- ❑ 11वें भाव में बुध राशि 1, 5, 9 में हो तो 1 या 2 पुत्र होंगे। 2, 6, 10 में जातक चित्रकार, टाइपिस्ट, कम्पाउण्डर होगा। 3, 7, 11 में शिक्षा डिमोस्टेटर। 4, 8, 12, में हो तो स्वतंत्र व्यापार की संभावना है।
- ❑ 12वें भाव में बुध हो तो व्यक्ति खर्चीला, ज्ञानी व विद्वान होगा एवं समाज में अग्रणी होगा।

उपाय

निर्बल बुध को बलवान करने तथा बुध दोष दूर करने हेतु।

1. विष्णु पूजन, यज्ञ व विष्णु सहस्र नाम का पाठ करें।
2. बुध रत्न पन्ना 7 से 8 रत्ती तक का, विषम संख्या लीलड़ी या हरा कांच भी पहन सकते हैं। हरी चड्डी या बनियान पहनें।
3. बुधवार को यम की पूजा करें और ब्राह्मण से जप कराएं।
4. बुधवार को गणपति दर्शन कर भोग लगाएं। गणपति को दूध चढ़ाएं।
5. गाय को हरी घास दें। हरी सब्जी, अन्न क्षेत्र में दे व हरा वस्तु मंदिर में चढ़ाए।
6. हाथी को नारियल दें।
7. सत्यनारायण व्रत व कथा करें।
8. कांसे के पात्र में सुवर्णतुष डालकर छायादान करें।
9. गौ को मूंग की दाल, गुड़ तथा हर बुधवार को रोटी दें।
10. तोते को हरी मिर्च दें, तोता पालें।
11. वैष्णव संत के घर हर बुधवार 'सीधा' का सामान दें।
12. एकादशी का व्रत करें व साधुओं को हरे फल दान दें।
13. पारद शिवलिंग, बुधवार व्रत कथा व बुधवार को व्रत करना भी श्रेष्ठ होता है।

❑❑❑

बुध का खगोलीय स्वरूप

बुध सूर्य के सबसे निकटतम ग्रह है। इसी कारण इस पर भयंकर उष्णता है। बुध सूर्य से 5,80,00,000 कि.मी. की दूरी पर स्थित है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 88 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। बुध सदैव अपना एक भाग सूर्य के सम्मुख रखकर सूर्य की परिक्रमा करता है। यह हमारे सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। इसका व्यास केवल 5160 कि.मी. है और इसका गुरुत्व भी हमारी पृथ्वी से एक चौथाई है। पृथ्वी पर छः फुट कूदने वाला व्यक्ति बुध पर चौबीस फुट ऊंचा कूद सकेगा। सूर्य का निकटतम ग्रह होने के कारण इसे देखा जाना भी कठिन है। यह सूर्य के साहचर्य में न होने पर, सूर्योदय के कुछ मिनट पहले पूर्वी क्षितिज पर अथवा सूर्यास्त के कुछ ही मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज पर, प्रथम कक्षा के तारे के समान चमकता हुआ दिखाई देता है। बुध पूर्व दिशा में अस्त होने के बत्तीस दिन बाद वक्री होता है। वक्री होने के चार दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है तथा अस्त होने के सोलह दिन बाद पूर्व में उदय, उदय के चार दिन बाद मार्गी, मार्गी के बत्तीस दिन बाद पूर्व में पुनः अस्त हो जाता है।

बुध को क्षैतिज, सौम्य, बोधन, शान्त, कुमार हेम्न, उतारूद आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

बुध की गति–बुध अपनी धुरी पर 24 घण्टा 5 मिनट में पूरी तरह घूम लेता है तथा 87 दिन 23 घण्टा 15 मिनट और 16 सैकेण्ड में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है। जिस समय यह सूर्य के निकट होता है तब प्रति सैकेण्ड 35 मील, दूर रहने पर प्रति सैकेण्ड 23 मील और मध्यम गति 29 मील प्रति सैकेण्ड की गति से परिभ्रमण करता है। यह एक घण्टे में एक लाख नौ हजार मील की गति से चलता है। स्थूल मान से बुध एक राशि पर 25 दिन व एक नक्षत्र पर 8 1/2 दिन रहता है।

सूर्य से 27 डिग्री अंश की दूरी से आगे होने पर यह वक्री हो जाता है। जिस राशि पर यह वक्री होता है, उस पर 25 दिन ही रह पाता है। सूर्य की गति से भी तीव्र गति वाला होने के कारण यह पूर्व में अस्त और पश्चिम में उदय होता है और

जब यह वक्री होता है तब पश्चिम में अग्न व पूर्व में उदय होता है। वक्री होने की स्थिति में यह सूर्य से 12 डिग्री अंश की दूरी पर तथा मार्गी होने पर 13 डिग्री अंश पर अस्त हो जाता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर जाने से वक्री और बारहवीं पर शीघ्रगामी होता है। यह 92 दिन मार्गी और 23 दिन वक्री रहता है। मार्गी होने पर 37 दिन उदित और 36 दिन अस्त रहता है। वक्री होने पर 33 दिन उदय और 16 दिन अस्त रहता है। जब बुध की गति 113/32 घटी पल की होती है तब यह परम शीघ्रगामी या अतिचारी हो जाता है और इस स्थिति में 20 दिन रहता है। यह एक वर्ष में तीन बार वक्री होता है। बुध वक्री होने पर एक दिन आगे या पीछे स्थिर सा प्रतिभासित भी होता है।

❑❑❑

कन्यालग्न की चारित्रिक विशेषताएं

कन्यालग्न का स्वरूप

पार्वतीयाथ कन्याख्या राशिर्दिनबलान्दिता।
शीर्षोदया च मध्याङ्गा द्विपाधाध्यचरा च सा ॥13॥
सा सस्यदहना वैश्या चित्रवर्णा प्रभुंजिनी।
कुमारी तमसा युक्ता बालाभावा बुधाधिपा॥14॥

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 13

पर्वतचारिणी, दिवाबली, शीर्षोदय, मध्यम देह, द्विपद, दक्षिण वासिनी, अन्न और अग्नि हाथ में रखने वाली, वैश्य जाति, चित्रवर्ण, वायुतत्त्व, कुमारी तथा तमोगुण से युक्त कन्यालग्न का स्वामी बुध है॥13-14॥

क्रीडामन्थरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसबाहुः सुखी,
श्लक्ष्णः सत्यरतः कलासु निपुणः शास्त्रार्थविद् धार्मिकः।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहैर्वित्तैश्च संयुज्यते,
कन्यायां परदेशगः प्रियवचाः कन्याप्रजोऽल्पात्मजः ॥6॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 6

कन्या राशि में चंद्रमा हो तो मनुष्य लज्जा व संकोच के कारण स्त्रियोचित हाव भाव से युक्त दृष्टि व गति (चाल) वाला, झुके हुए कन्धों व लटके हुए हाथों (भुजाओं) वाला, सुखी कोमल तन-मन वाला, सत्य का पक्षधर, कलाओं में निपुण, शास्त्रों के अर्थ को समझने वाला, धार्मिक, बुद्धिमान्, संभोग प्रिय, दूसरे के धन व मकान को पाने वाला, जन्म स्थान से अन्यत्र रहने वाला, प्रियभाषी, अधिक कन्या संतति वाला, कम पुत्रों वाला होता है।

कन्याविलग्ने तु नरः प्रसूतो विज्ञानविद्यागमशास्त्रलुब्धः।
लुब्धो गुरुणां रतिलालसश्च मानी च सौभाग्यगुणैश्च युक्तः॥6॥

–वृद्धयवन जातक अ.24/श्लो.6/ पृ.288

यदि कन्यालग्न में जन्म हो तो मनुष्य विशेष ज्ञान की लालसा रखने वाला विद्यार्जन करने वाला, शास्त्रों के मर्म को जानने वाला, लोभी स्वभाव वाला, गुरुओं की संगति चाहने वाला, रति क्रिया से प्रेम करने वाला, मान-सम्मान वाला, सौभाग्यशाली व गुणों से युक्त होता है।

कन्यालग्नभवः क्रियासुनिपुणः श्रीमान् सुधीः पंडितः
मेधावी वनिताविलासरसिको बन्धुप्रियः सात्विकः ॥6॥

–जातक पारिजात श्लो.6/पृ.678

कन्यालग्न में उत्पन्न जातक विविध क्रियाओं में अत्यन्त निपुण, धनी, बुद्धिमान, पंडित, मेधावी, बन्धुओं से प्रेम करने वाला, स्त्रियों के विलास का रसिक, सात्विक (वैसे तो प्रत्येक मनुष्य में सत्व रज, तम तीनों गुण रहते हैं परन्तु सत्वगुण जिसमें अधिक हो उसे सात्विक कहते हैं), बन्धुओं से प्रेम करने वाला होता है।

श्यामः सुवाग्विनीतः प्रांशु सुकुमारमूर्तिरबलाद्यैः।
स्त्रीभ्योऽर्थभागनिष्ठो दीर्घशिरा मधुसमाक्षश्च॥1॥

–सारावली श्लो. 10/पृ. 466

यदि जन्म लग्न में कन्या राशि व कन्या रशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक काले वर्ण का, सुन्दर वालों वाला, विनीत, नम्र, लम्बा कद, सुन्दर स्वरूप स्त्रियों के द्वारा धन प्राप्त करने वाला, लम्बे ललाट वाला और सहरद के समान नेत्र वाला होता है।

कन्यालग्नभवो बालो, नानाशास्त्र विशारदः।
सौभाग्यगुण सम्पन्नः सुन्दरः सुरतप्रियः॥

–मानसागरी अ. 1/श्लो. 6

कन्यालग्न वाला मनुष्य विविध कलाओं में प्रवीण, रुचिशील, कल्याण-शान्ति-विधायक, सौन्दर्य अभिलाषी, साफ-स्वच्छता का प्रेमी, नित्य लक्ष्मीयुत तथा कामी वासना प्रधानमति एवं विषय ज्ञानी होता है।

नक्षत्र चरणानुसार फलादेश

टो-पा-पी	पू-ष-ण-ठ	पे-पो
उत्तराफाल्गुनी	हस्त-4	चित्रा-2

उत्तरायास्त्वय: पादा हस्त चित्रार्द्ध कन्या।।

उत्तराफाल्गुनी (सूर्य नक्षत्र), हस्त (चंद्र नक्षत्र) तथा चित्रा (मंगल नक्षत्र) इन तीनों के मेल से कन्या राशि की उत्पत्ति होती है। तेजस्विता, कोमलता और कठोरता तीनों का समन्वय कन्या राशि में मौजूद है।

चरण	अंश	नवमां.-शेश	राशी.श	नक्षत्रेश	उप-नक्षत्रेश	स्वामी अंश से तक
द्वितीय	3.20.0	श.	बु.	सू.	रा.	0.00.00 से 1.13.20
तृतीय	6.40.0	श.	बु.	सू.	गु.	1.13.20 से 3.0.0
चतुर्थ	10.00..00	गु.	बु	सू.	श. बु. के. शु.	3.0.0 से 5.6.40 5.6.40 से 7.0.0 7.0.0 से 7.46.40 7.46.40 से 10.0.0

उत्तराफाल्गुनी शेष 3 चरण

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र सिंह राशि के 26.40 अंश से कन्या राशि 10.00.00 अंश तक पड़ता है। इसके लिए अर्यमा शब्द का प्रयोग भी होता है। इसका अर्थ यम, संयम, तथा काबू में रखना भी है। इस तरह यह नक्षत्र शासन व राज्य से संबंधित होकर सूर्य के नक्षत्र के रूप में प्रयुक्त है।

जातक परिजात के अध्याय 7 में वर्णन है "भोगी चोत्तर फाल्गुनी जनितो मानी परस्त्रीरत:" अर्थात् सिंह का चंद्र भी हो व उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में कन्या में भी चंद्र होगा तो भी सूर्य के नक्षत्र में होने से फल अच्छा करेगा। वह राजशाही होने से भोगी भी रहेगा और परस्त्री में रत भी बन सकता है। सूर्य राजा है वह सब तरह की भोग सामग्री से युक्त है उसके नक्षत्र में चंद्रमा का भोग सम्पन्न हो जाना स्वाभाविक है। सूर्य मान का कारक ग्रह माना गया है। शुभ ग्रह चंद्र से प्रभावित हो तो इसका नक्षत्र

नाम की अभिव्यक्ति कर सकता है सूर्य के नक्षत्र में चंद्रमा अपनी स्वाभाविक स्थिति से विपरीत दिशा में जाने से परस्त्री रत व्यक्ति बन जायेगा।

चंद्रमा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में–'विद्यार्थ युक्त सुख भोग भागी सौभाग्य युक्तोऽर्थममें शशांके।' चंद्र उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति विद्या और धन से युक्त सुखी और भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। इसलिए विद्या तथा राजसी भोगों का चंद्रमा की इस नक्षत्र में स्थिति से प्राप्त होना उपयुक्त होगा क्योंकि ये सब गुण सूर्य में पाए जाते हैं।

सारदीप के अनुसार–*'उत्तराफाल्गुनी पाद चतुर्णा तद् भवस्यच पण्डित: पृथ्वीपालो विजयी धार्मिको भवत्'*

उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्म–व्यक्ति पंडित होगा इसका कारक इस पाद का नवांशेश गुरु है। नक्षत्रेश, सूर्य दोनों विद्या के लिए अच्छे हैं। दोनों का चंद्र पर प्रभाव पंडित बनायेगा।

चरण	अंश के अवधि	नवमां. -शेश	राशी. श	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र स्वामी	स्वामी अंश से तक
प्रथम	13.20.0	मं.	बु.	चं.	चं.	10.0.0 से 11.6.40
द्वितीय	16.40.0	शु.	बु.	चं.	मं.	11.6.40 से 11.53.20
तृतीय	20.0.0	बु.	बु.	चं.	रा.	11.53.20 से 13.53.20
चतुर्थ	23.20.0	चं.	बु.	चं.	गु. श. बु. के. शु.	13.53.20 से 15.40.00 15.40.00 से 17.46.00 17.46.40 से 19.40.00 19.40.00 से 20.26.40 20.26.40 से 22.40.00

उत्तराफाल्गुनी के दूसरे चरण में जन्म–हो तो व्यक्ति राजा होता है। इसका नवांशेश शनि है और नक्षत्रेश सूर्य है जहां तक चंद्र पर नक्षत्र स्वामी सूर्य के प्रभाव का प्रश्न है यह प्रभाव राजा बना सकता है क्योंकि सूर्य राज्य का कारक है। परन्तु शनि नक्षत्र चरण का स्वामी है अत: परस्पर विरोध रहेगा। अत: जहां तक स्वय शनि के अपने गुणों का प्रश्न है जैसे क्षेत्र वह बहुमूल्य हो जाएंगे क्योंकि उसका संपर्क दो राजकीय ग्रह सूर्य और चंद्र से हो जायेगा।

उत्तराफाल्गुनी के तीसरे चरण में जन्म–इस नक्षत्र चरण में यदि चंद्र स्थित होगा तो व्यक्ति विजयी होगा। इसके नवांश का स्वामी भी शनि है। शनि+चंद्र परस्पर शत्रु हैं और शनि सूर्य का भी शत्रु है। अत: शत्रु रूप शनि को सूर्य और चंद्र से हानि उठानी होगी। अत: व्यक्ति विजयी होगा।

उत्तराफाल्गुनी के चौथे चरण में जन्म–इस नक्षत्र चरण में चंद्र होने से जातक धार्मिक होगा। इस चरण का नवांशेश गुरु है जो कि धार्मिक है और नक्षत्रेश स्वामी सूर्य का आत्मरूप सात्विक है। अत: चंद्र पर दोनों ओर से धार्मिक प्रभाव के कारण व्यक्ति धार्मिक बनेगा।

हस्त नक्षत्र

नक्षत्रेश–चंद्रमा, **राशीश**–बुध

हस्त नक्षत्र फल–*'चोरोघृणी पापरतोऽतिधूर्त उत्साहवान् शीत करे करस्थे।'* यदि चंद्र हस्त नक्षत्र में हो तो मनुष्य चोर, घृणा योग्य, पापरत, धूर्त व उत्साही होगा।

नोट–इस श्लोक में जिन-जिन अवगुणों का वर्णन है उससे ठीक उलट इसी संदर्भ में 'जातक-परिजात' में आये हैं। हस्तर्क्षे यदि काम धर्मनिरत प्राज्ञोपकर्त्ता धनी 666। उनका कथन है कि हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है, उपकार करने वाला तथा बुद्धिमान होता है। अस्तु यहां फल जातक परिजात का श्रेष्ठ प्रतीत होता है।

हस्त नक्षण का चरणगत फल–*'हस्ते जातो यदा बाल शूरोवादी च रोगवान, धनधान्य युत: श्रीमान् फलस्यात प्रथमाधित:'*

चरण	अंश से तक	नवांशेश	राशीश	नक्षत्रेश	स्वामी अंश से तक
प्रथम	23.20.0 से 26.40.0 तक	सू.	बु.	मं. रा.	23.20.00 से 24.06.40 26.06.40 से 27.53.20
द्वितीय	26.40.0 से 30.00.0 तक	बु.	बु.	श.	27.53.20 से 30.00.00

हस्त के प्रथम चरण में जन्म–इसमें जन्मा जातक शूर तथा झगड़ा जीतने वाला होगा। जिसका कारण यह चरण मंगल के नवांश का है। चंद्र-मंगल का विशेष प्रभाव इसमें होने से शूरवीर व झगड़ालू दोनों ही गुण होंगे।

हस्त के द्वितीय चरण में जन्म–इसमें जन्मे जातक को रोग विरासत में मिलेगा। कारण नवांशेश शुक्र+चंद्र परस्पर शत्रु हैं। अत: रोगी बनने की संभावना रहती है।

हस्त के तृतीय चरण में जन्म–इसमें जन्मा व्यक्ति धनी पैदा होता है कारण नवांशेश बुध का पूर्ण प्रभाव रहता है। अत: धन-धान्य में वृद्धि होगी ही।

हस्त के चतुर्थ चरण में जन्म–अगर जातक इस नक्षण चरण में पैदा हो तो इसका नवांशेश चंद्र ही होगा। स्व नक्षत्र में चल आदि गुणों में वृद्धि करके श्रीमान बनायेगा।

चित्रा नक्षत्र

नक्षत्र स्वामी–मंगल, **राशि**–कन्या, **स्वामी ग्रह**–बुध

चंद्रमा चित्रा नक्षत्र में–"*चित्रासु चित्रांबस्मात्यधारी, सुलोचनांग पुरुषश्च जात:*" चित्रा नक्षत्र में स्थित चंद्र से जातक कई प्रकार के वस्त्र व आभूषण पहनता है। उसकी आंखें और अंग सुंदर होते हैं। चित्रा स्वयं मंगल का नक्षत्र होने से यह दोनों मित्र हैं इसलिए शुभ फल देगा।

चित्रा के दो चरणों का फल–"*चित्रायां प्रथमात्पादात फलं जातस्य कश्मते चोर चित्रकार: स स्यात् परदारगामी च पीड़ित।*"

चित्रा के प्रथम चरण में जन्म–इस चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर होगा। क्योंकि इसका नवांशेश सूर्य है। नक्षत्रेश मंगल है। अत: सूर्य+मंगल+चंद्र का प्रभाव होगा।

चित्रा के द्वितीय चरण में जन्म–इस चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चित्रकार होगा। इस चरण का स्वामी बुध नवांशेश है। बुध+मंगल+चंद्र योग से चित्राकारिता प्रकट होती है। ये दो चरण कन्या राशि के अन्तर्गत आते हैं शेष दो चरण तुला राशि के अन्तर्गत आते हैं।

भोज संहिता

कन्यालग्न में उत्पन्न स्त्री–कन्या चूंकि बुध राशि का लग्न है। इसका स्वामी बुध विद्या का स्वामी एवं व्यापारी भी है। अत: इस लग्न में जन्मी जातिका विनय सम्पन्न, व्यवहार कुशल होगी। वह सादे स्वभाव की तथा सभी प्रकार के सुख सौभाग्य को प्राप्त करने वाली होगी। वह अपने परिवार एवं बंधुवर्ग के प्रति स्नेहाधीन और बहुत सी कलाओं की जानकारी रखने वाली होगी। यह कन्या नारी इच्छाओं का दमन करने में माहिर होगी।

कन्यालग्न व राशि के शुभाशुभ ग्रह–लग्नेश और दशमेश बुध प्रधान ग्रह हैं और सदा ही शुभ रहते हैं।

- भाग्येश और धनेश (मारकेश) होता हुआ भी शुक्र त्रिकोण राशि का स्वामी होने से सदा शुभ होता है व बुध और शुक्र दोनों इस लग्न व राशि के प्रधान ग्रह हैं तथा हमेशा प्राय: शुभ ही करते हैं।
- इस लग्न का परम शत्रु अष्टमेश तृतीयेश मंगल है। जहां भी बैठेगा उस भाव को बिगाड़ देगा। यह जितना पीड़ित रहेगा उतना ही अच्छा फल प्रदान करेगा।
- यहां पर चतुर्थ सप्तमेश होकर भी गुरु पापी है। केन्द्राधिपत्य दोष उसको है। यह अगर स्वगृही हो तो हंस योग बनकर शुभ फल देगा। द्विस्वभाव लग्न के कारण सप्तमेश गुरु बाधक ग्रह है।
- लाभेश होने से चंद्र सदैव पापी होता है। चंद्र निर्बल होकर लाभ देगा।
- पंचमेश षष्ठेश शनि (दूषित) ग्रह है। यह सम फल प्रदान करता है। आधा अच्छा आधा बुरा।
- राजयोग कारक ग्रह शुक्र व बुध हैं। शुक्र त्रिकोणेश है। बुध दशमेश है। दोनों के संबंध से राजयोग व लक्ष्मी योग बनता है।
- सूर्य द्वादशेश है तथा पृथकता कारक ग्रह है। परंतु यह साहचर्य से फल देता है। इसका फल सम होता है। मारकेश निश्चित तौर पर गुरु महादशा में शनि की अंतर्दशा है। या फिर शुक्र में शनि की अंतर्दशा बनेगी।
- शुक्र अपनी दशा अंतर्दशा में अशुभ फल नहीं देगा परन्तु वह पाप ग्रह के साथ हो तो अशुभ फल देगा चोट, धोखा या धनहानि देगा।
- शुक्र में शनि की दशा अंतर्दशा में जातक योगहीन बनेगा।
- यहा गुरु+शुक्र, गुरु+शनि के योग निष्फल योग देंगे।

रोग

कन्या राशि बुध व षष्ठ भाव षष्ठेश पर पाप प्रभाव हो तो कब्ज, टाइफाइड, हर्निया या आंत्र रोग बनते रहेंगे। क्योंकि षष्ठ स्थान और कन्या राशि काल पुरुष का षष्ट अंग आंतड़ियां हैं।

राशिगत स्वभाव

कन्या राशि वाली कोई भी स्त्री हो वह गौर वर्ण लिए हुए होगी। ग्रह प्रभाव हो तो जातिका का रंग कुछ साफ रहेगा। वह सदैव अपने शरीर को स्वच्छ रखेगी और उपयुक्त वेशभूषा धारण करेगी। यह सौभाग्यमती होगी। इस राशि में जन्मी

जातिका की सन्तति तो होती है पर अधिक भी हो सकती है। उसमें कन्या की संभावना ज्यादा रहती है। जातिका घर के विविध कार्यों में कुशल पढ़ी-लिखी धर्मवती और परिजनों की प्यारी होती है। इसके पेट में प्राय: दर्द रहता है। आयु के 8वें वर्ष में गिरने का भय, 20वें वर्ष में लम्बी बीमारी का भय रहता है और बचे तो 70 वर्ष की आयु पार कर सकती है। प्राय: ऑपरेशन से, पित्त रोग से या सदमे से मृत्यु की संभावना बनती है। प्राय: आयु के 3, 5, 10, 18, 42, 40वें वर्ष में संकट आते हैं।

स्वरुप–प्राय: मंझोला कद, गाल भरे हुए, बाहु और कंधे छोटे, बड़े नेत्र, स्थूल तथा सामान्य शरीर, कंधे व बाहू ढीले होते हैं। स्वभाव में स्त्री वर्गीय झलक होगी। रंग गोरापन लिए गेहुंआ आकर्षक व घनी केश वाली।

स्वभाव–नेत्रों में लज्जा, कामी प्रवृत्ति उष्मा का अभाव। दूसरों की भूलों को बारीकी से निकालने वाली पढ़ने में होशियार हो, चतुर व चालक हो, विदूषी भी होगी। पराये धन व मकानों का लाभ पावें। व्यापारी लाइन मन में हो, मेडिकल लाइन में होशियार, सामाजिक कार्य में रुचि वाली, राजनीति में होशियार व सफल होगी। पति पक्ष से परेशान रहेगी एवं पुत्र कम पुत्री ज्यादा होंगी। स्वयं भावुक हो। जातिका में बहकाने में शीघ्र आये बिना सोचे समझे काम करने की प्रवृत्ति प्रधान होगी। कोमल प्रकृति होगी, उसके मन की थाह पा लेना कठिन है। जातिका दोहरा जीवन जीने वाली होगी। दो विरोधी पार्टियों में मेल रख सकने वाली पर स्वभाव से स्वार्थी होगी। प्रेम के क्षेत्र में सदा असफल रहेगी। संकट में शीघ्र हारने वाली होगी।

अन्य योग

- ❑ कन्यालग्न में लग्न में नीच का शुक्र भी बहुत अच्छा धन देता है। प्रथम कोटि का व्यक्ति विद्वान व सुखी होगा।
- ❑ कन्यालग्न में बुध जातिका को विदूषी व धनी बनाता है। लग्न में बुध राजयोग प्रदाता होता है। जिसके प्रभाव से नेता व मंत्री तक बनते हैं। लग्न में बुध चौथे, चंद्र, गुरु व मंगल हो तो जातिका मंत्री, शासनाधिकारिणी बनती है।
- ❑ लग्न व दशम में बुध के होने से भद्र योग बनेगा। इन स्थितियों में बुध अच्छी सम्पत्ति व राजयोग देगा और चतुर्थ एवं द्वादश में गुरु हंसयोग से धनी बनायेगा।
- ❑ कन्यालग्न में बुध+शुक्र का योग कहीं भी हो व्यक्ति को धनी मानी व यशस्वी बनाता है।
- ❑ लग्न में मंगल हो तो बुरा प्रभाव होता है। कन्यालग्न का परम शत्रु ही मंगल है। परन्तु सातवें भाव में मंगल+राहु का संयोग हो तो वह कुण्डली के

मांगलिक दोष को तोड़ देता है। ''नभतल मंगल राहु योगे'' उल्टे अच्छे फल प्राप्त होते हैं।

- कन्यालग्न में मंगल अगर शुभ दृष्ट व पाप दृष्ट दोनों ही हों तो उत्तम फल देगा। जातक हट्टा-कट्टा, स्वाभिमानी, पराक्रमी होगा, जमीन सर्वे पर कार्य अच्छा रहता है।
- 50 वर्ष की जातिका भी 30 वर्ष की दिखती है। जवानी बनी रहती है।
- लग्न में सूर्य अनिष्ट फल देगा। सेहत खराब रखेगा। कन्यालग्न में चंद्र हो तो जातिका सर्वांग सुंदर, बुद्धिमति राजसेवी होगी।
- कन्यालग्न में सूर्य+मंगल साथ हों तो 30वें वर्ष में आंत्रशोथ होगा व ऑपरेशन का योग भी बनता है।
- लग्न में शनि मूत्रकृच्छ की बीमारी देगा। घरेलू जीवन अच्छा नहीं होगा।
- कन्यालग्न में अकेले राहु से भी कुण्डली भौमपंचक दोष वाली बनती है। व्यक्ति लोगों के काम में दखल ज्यादा देते हैं। जातिका व्यवहार में अव्यवस्थित होती है। जातिका के विवाह में देरी होती है।
- कन्यालग्न में केतु हो तो अच्छा धनयोग रहता है पर सातवें में मंगल राहु, शनि के कारण राहु की दशा में शनि की अंतर्दशा में काफी धन हानि हो जाती है।
- कन्यालग्न में मंगल अकेला दूसरे भाव में तुला का हो तो धन संग्रह होगा। जातक खर्च में कंजूस होगा। यह डॉक्टर व वकील को खूब धन देता है।

❑❑❑

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
1	अश्विनी	चू,चे,चो,लू	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	,ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विपद	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चांदी	बि. 2 सि. 1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विपद	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,उ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरू	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरू	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरू	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मृ 1 म 1 मू 1 कु	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरू	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मृ. 2 मि.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जु,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	मि. 3 वि. 1	[illegible]	[illegible]
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गु, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 2 सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरू	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरू	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरू	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरू	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
कर्क	8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्यंष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
धनु	19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वदंव	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	अभिजित्	ब्रह्मा										
	23.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
कुंभ	25.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	26.	पूर्वा भा.	अजेकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
मीन	27.	उ. भा.	अहिर् बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	28.	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम

कन्यालग्न पर अंशात्मक फलादेश

कन्यालग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–5/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–टो
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पृथ्वीपालो'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी होगा।

यहां लग्न जीरो (Zero) में एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है एवं कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। लग्नेश बुध की दशा कमजोर फल देने वाली साबित होगी। भाग्येश शुक्र भी उत्तम फल नहीं दे पायेगा।

कन्यालग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–5/3/20/0

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–टो
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पृथ्वीपालो'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी होगा।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंशों' का है तथा बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

कन्यालग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–5/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–टो
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पृथ्वीपालो'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और

देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी होगा।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/10/20/0 से 5/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–पा
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'विजयी'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से ऐसा जातक सर्वत्र विजयश्री का वरण करेगा। जातक प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा अच्छा फल देगी। शनि अनिष्ट फल नहीं देगा। शनि व शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 4 से 5

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/10/20/0 से 5/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–अर्यमा

10. वर्णाक्षर–पा

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'विजयी'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से ऐसा जातक सर्वत्र विजयश्री का वरण करता है। जातक प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शनि व शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–5/10/20/0 से 5/6/40/0

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–गौ

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–अर्यमा

10. वर्णाक्षर–पा

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'विजयी'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से ऐसा जातक सर्वत्र विजयश्री का वरण करता है। जातक प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करता है।

लग्न यहां पांच से छ: अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शनि व शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–5/6/40/0 से 5/10/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–पी
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, संस्कारी एवं सभ्य होगा।

यहां लग्न छ: से सात अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में है एवं बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी शुभ फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–5/6/40/0 से 5/10/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–पी
11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, संस्कारी एवं सभ्य होगा।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी उत्तम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–5/6/40/0 से 5/10/0/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–गौ

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा

10. **वर्णाक्षर**–पी

11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, संस्कारी एवं सभ्य होगा।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में है। उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी अत्यंत शुभ फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–5/6/40/0 से 5/10/0/0 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–पी
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, संस्कारी एवं सभ्य होगा।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी अत्यन्त शुभ फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–5/13/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य
10. **वर्णाक्षर**–पू
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'शूरो वादी च'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है—हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न व्यक्ति शूरवीर एवं तर्कशास्त्री होता है।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर 'आरोह अवस्था' में है व पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र—हस्त　　**2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—5/13/20/0

4. वर्ण—वैश्य　　**5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—भैंस　　**7. गण**—देव

8. नाड़ी—आद्य　　**9. नक्षत्र देवता**—सूर्य

10. वर्णाक्षर—पू　　**11. वर्ग**—मूषक

12. लग्न स्वामी—बुध　　**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल　　**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र　　**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'शूरो वादी च'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है—हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न व्यक्ति शूरवीर एवं तर्कशास्त्र का ज्ञाता होता है।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में पूर्णबली है। बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र—हस्त　　**2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—5/13/20/0

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य
10. **वर्णाक्षर**–पू
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'शूरा वादी च'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न व्यक्ति शूरवीर एवं तर्कशास्त्री होता है।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में है एवं पूर्णबली है। बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–5/13/20/0 से 5/16/40/0 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य
10. **वर्णाक्षर**–ष
11. **वर्ग**–मीढ़ा
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'रोगवान'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म होने से व्यक्ति रोगी होता है। जातक के शरीर में स्थाई बीमारी रहेगी।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य आरोह अवस्था में है एवं पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एवं उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–5/13/20/0 से 5/16/40/0 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–सूर्य
10. वर्णाक्षर–ष
11. वर्ग–मीढ़
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'रोगवान'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म होने से व्यक्ति रोगी होता है। जातक के शरीर में स्थाई बीमारी रहेगी।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है एवं पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–5/12/20/0 से 5/16/40/0 तक

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य
10. **वर्णाक्षर**–ष
11. **वर्ग**–मीढ़ा
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'रोगवान'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म होने से व्यक्ति रोगी होता है। जातक के शरीर में स्थाई बीमारी रहेगी।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है तथा पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/16/40/0 से 5/20/0/0 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य
10. **वर्णाक्षर**–ण
11. **वर्ग**–मीढ़ा
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
18. **प्रधान विशेषता**–'धन-धान्य युक्त'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होगा।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है एवं पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। चंद्रमा की दशा भी ठीक रहेगी।

कन्यालग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/16/40/0 से 5/20/0/0 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य
10. **वर्णाक्षर**–ण
11. **वर्ग**–मीढ़ा
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
18. **प्रधान विशेषता**–'धन-धान्य युक्त'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होगा।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है एवं 'पूर्ण बली' है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं चंद्रमा की दशा भी ठीक रहेगी।

कन्यालग्न, अंश 18 से 19

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/16/40/0 से 5/20/0/0 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–भैंस 7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य 9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. **वर्णाक्षर**–ण 11. **वर्ग**–मीढ़ा

12. **लग्न स्वामी**–बुध 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'धन-धान्य युक्त'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है- हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होगा।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है तथा पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी।

कन्यालग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त 2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–5/20/0/0 से 5/23/20/0 तक

4. **वर्ण**-वैश्य 5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–भैंस 7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य 9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. **वर्णाक्षर**–ठ 11. **वर्ग**–मीढ़ा

12. **लग्न स्वामी**–बुध 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व. 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है एवं पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं चंद्रमा की दशा भी उत्तम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–हस्त | **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–5/20/0/0 से 5/23/20/0 तक

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–भैंस | **7. गण**–देव

8. नाड़ी–आद्य | **9. नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. वर्णाक्षर–ठ | **11. वर्ग**–मीढ़

12. लग्न स्वामी–बुध | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्र | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व. | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व

18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होता है।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी।

कन्यालग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–हस्त | **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–5/20/0/0 से 5/23/20/0 तक

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–भैंस | 7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. **वर्णाक्षर**–ठ | 11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–बुध | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होता है।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है एवं बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी।

कन्यालग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त | 2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–5/20/0/0 से 5/23/20/0 तक

4. **वर्ण**–वैश्य | 5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–भैंस | 7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. **वर्णाक्षर**–ठ | 11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–बुध | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होता है।

यहां लग्न बाईस से तैईस अंशों में अवरोह अवस्था में है एवं बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी।

कन्यालग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–5/26/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–पे
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'चोर'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर कार्य, तस्करी में रुचि रखता है।

यहां लग्न तैईस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है तथा बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। सूर्य की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

कन्यालग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–5/26/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद

6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–त्वष्टा
10. **वर्णाक्षर**–पे
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'चोर'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर कार्य, तस्करी में रुचि रखता है।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था में है एवं बलवान हैं। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट नहीं करेगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–I
3. **नक्षत्र अंश**–5/26/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–त्वष्टा
10. **वर्णाक्षर**–पे
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'चोर'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर कार्य, तस्करी में रुचि रखता है।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। मंगल मिश्रित फल देगा। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट नहीं करेगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–5/26/40/0 से 5/30/0/0 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–पो
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, संगीत-सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–5/26/40/0 से 5/30/0/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–पो
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, संगीत-सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।

यहां लग्न सत्ताईस से अठ्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–5/26/40/0 से 5/30/0/0 तक
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–पो
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, संगीत-सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।'

यहां लग्न अठाईस से उन्तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में "हीनबली" होने से सारा तेज समाप्ति की ओर है।

कन्यालग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–5/20/40/0 से 5/30/0/0 तक

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–व्याघ्र

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–मध्य

9. नक्षत्र देवता–त्वष्टा

10. वर्णाक्षर–पो

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता त्वष्टा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, संगीत-सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।

यहा लग्न उन्नतीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था में है एवं निस्तेज है।

❑❑❑

कन्यालग्न और आयुष्य योग

1. कन्यालग्न वालों के लिये शुक्र द्वितीयेश होते हुए भी योगकारक व शुभ फलदाता है। सूर्य यहां मुख्य मारकेश का काम करेगा। मंगल अष्टमेश होने से सहायक मारकेश है। आयुष्य प्रदाता ग्रह बुध है।
2. कन्यालग्न वालों की मृत्यु दूसरों के आक्रमण, शास्त्रास्त्र द्वारा, परदेश में, कफजन्य रोगों से संभव है।
3. कन्यालग्न वालों की औसत आयु 84 वर्ष की होती है। जन्म के उपरान्त 3, 8, 11 माह तथा 1, 2, 3, 6, 9, 10, 11, 17, 22, 26, 30, 33, 41, 49, 57, 62, 68, 72, 75 एवं 78 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट एवं अल्प मृत्यु संभव है।
4. यदि कन्यालग्न में, कन्या का नवमांश हो, बुध सातवें, बृहस्पति गोपुर में, शनि मृदु अंश में हो तो ऐसा जातक पूर्ण यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
5. कन्यालग्न में बुध हो तो जातक दीर्घ देह वाला एवं उत्तम आयु को भोगने वाला प्राणी होता है।
6. कन्यालग्न में बुध, बृहस्पति एवं शुक्र छठे हो तथा मंगल सातवें या शनि आठवें नीच का हो तो व्यक्ति कुबड़ा होता है।
7. कन्यालग्न 15 अंशों में हो, सभी सौम्य ग्रह लग्न से पूर्वार्द्ध एक से सप्तम भाव तक बैठे हों, कोई भी तीन ग्रह उच्च के हों तो जातक 120 वर्ष की परमायु को प्राप्त करता है।
8. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल लग्न में हो तथा गुरु एवं शुक्र से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
9. कन्यालग्न में चंद्रमा छठे कुम्भ राशि का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

10. कन्यालग्न में वृश्चिक का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोणवर्ती हो तो जातक 85 वर्ष की आयु भोगता है।
11. कन्यालग्न में बुध लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 84 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
12. कन्यालग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।
13. कन्यालग्न में सूर्य+चंद्रमा दशम भाव में, शनि लग्न में एवं स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो एक प्रकार का उच्च राजयोग बनता है पर ऐसा जातक मात्र 68 वर्ष तक ही जी पाता है।
14. शनि लग्न में, धनु का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
15. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष में गुजर जाता है।
16. कन्यालग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक एवं विद्वान होते हुये 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. कन्यालग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ अष्टम स्थान में हो तो अष्टमेश मंगल पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
18. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल यदि मेष या सिंह राशि में हो तो जातक 42 वर्ष तक ही जी पाता है।
19. कन्यालग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
20. कन्यालग्न के द्वितीय या द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
21. कन्यालग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल के परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से बालारिष्ठ योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

22. कन्यालग्न में सूर्य+शनि+मंगल आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। यदि उपाय न किया जाए तो ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में होती है।

23. कन्यालग्न में सूर्य कुम्भ राशि में एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

24. कन्यालग्न में राहु-बुध+शनि द्वादश में हो, गुरु पंचम में हो तथा अन्य शुभ योग न हो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

25. कन्यालग्न में पंचम या छठे स्थान में सूर्य+बृहस्पति+राहु+मंगल हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

26. कन्यालग्न के आठवें स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

27. कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

28. कन्यालग्न के एकादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

29. कन्यालग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

30. कन्यालग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

31. कन्यालग्न में षष्ठेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

32. कन्यालग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा और शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

कन्यालग्न और रोग

1. कन्यालग्न में षष्टेश शनि लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. कन्यालग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश बृहस्पति पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. कन्यालग्न में चतुर्थेश बृहस्पति यदि अष्टमेश मंगल के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. कन्यालग्न में चतुर्थेश बृहस्पति मकर राशि में निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. कन्यालग्न के चतुर्थ स्थान में शनि धनु का एवं छठे स्थान में सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
6. जातक परिजात के अनुसार कन्यालग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
7. कन्यालग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं कुंभ का सूर्य छठे हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. कन्यालग्न के चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) का कष्ट होता है।
9. कन्यालग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. कन्यालग्न में बुध+बृहस्पति+मंगल की एक साथ युति दुःस्थानों में हो तो ऐसे जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।
11. कन्यालग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
12. कन्यालग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न को पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

13. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल लग्न में हो, लग्नेश बुध अष्टम में हो, लग्न को कोई पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

14. कन्यालग्न में लग्नेश बुध चौथे या बारहवें मंगल और शनि के साथ हो तो जातक को कुष्ठ (कोढ़) रोग होता है।

15. कन्यालग्न में शनि+चंद्रमा+बृहस्पति छठे स्थान में हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

16. कन्यालग्न में शुक्र+शनि हो, बृहस्पति पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को वीर्यस्राव का रोग होता है।

17. कन्यालग्न में शुक्र+शनि हो तथा सूर्य+बुध की युति कहीं भी हो तो व्यक्ति में नपुंसकता आती है।

18. कन्यालग्न में मंगल+शनि सप्तम भाव में हो तो जातक की स्त्री व संतान को कष्ट होता है।

19. कन्यालग्न में षष्ठम भाव में स्थित राहु जातक को रोगी बनाता है।

20. कन्यालग्न के दूसरे भाव में शनि हो, छठे राहु तथा द्वादश में मंगल जातक को भयंकर नेत्र पीड़ा व दिमाग में गर्मी देता है।

21. कन्यालग्न में नीच का शनि अष्टमस्थ होने से जातक को मूत्र विकार (Urine-problem) की समस्या रहती है।

22. कन्यालग्न में नीचस्थ शनि के साथ सप्तमेश गुरु भी आठवें हो तो मधुमेह, गर्भाशय रोग तथा गुह्य रोगों के कारण जातक पीड़ित रहता है।

23. कन्यालग्न पर शनि व बुध का प्रभाव हो तथा शुक्र मकर या कुंभ राशि में हो तो जातक अपनी पत्नी को संतुष्ट नहीं कर पाता।

24. कन्यालग्न में मंगल+शुक्र छठे हो तथा उन पर शनि या गुरु की दृष्टि हो तो जातक के पेट में घाव (अल्सर) होता है।

25. कन्यालग्न में चंद्रमा अष्टम भाव में हो तथा बुध+सूर्य+मंगल की युति कहीं भी हो तो जातक का पाचन तंत्र खराब होता है तथा जातक ब्लडप्रेशर के कारण मृत्यु को प्राप्त करता है।

26. कन्यालग्न के तीसरे भाव में मंगल व राहु तुला के हो तो जातक के अंडकोश पर जहरीला कीड़ा काटता है अथवा जातक को अंडकोश का ऑपरेशन (पोस्टग्लेंड) होता है।

27. कन्यालग्न में सूर्य+शनि सप्तमस्थ हो तथा बुध व चंद्रमा छठे स्थान में हो तो जातक को मूर्च्छा रोग (मिर्गी की बीमारी) होती है।

28. कन्यालग्न में चंद्रमा, अष्टम में गुरु एवं नवम में राहु हो तो राहु की दशा तथा गुरु के अन्तर में जातक को भयंकर शारीरिक कष्ट होता है।

29. कन्यालग्न में राहु+चंद्रमा चतुर्थ में हो तथा उस पर शनि का प्रभाव हो, शुभ ग्रह न देखते हों तो व्यक्ति को टी.बी. का रोग अवश्य होता है।

30. कन्यालग्न में शनि पंचम भाव में मकर का, तथा बुध+गुरु सप्तम में मीन राशि के हों तो जातक नपुसंक होता है।

31. कन्यालग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।

32. कन्यालग्न में सूर्य+चंद्रमा दशम भाव में, शनि लग्न में एवं स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो एक प्रकार का उच्च राजयोग बनता है पर ऐसा जातक मात्र 68 वर्ष तक ही जी पाता है।

33. शनि लग्न में, धनु का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

34. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

35. कन्यालग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

36. कन्यालग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ अष्टम स्थान में हो तो अष्टमेश मंगल पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

37. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल यदि मेष या सिंह राशि में हो तो जातक 42 वर्ष तक ही जी पाता है।

38. कन्यालग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

39. कन्यालग्न के द्वितीय या द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

40. कन्यालग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

41. कन्यालग्न में सूर्य+शनि+मंगल आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। यदि उपाय न किया जाए तो ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष की आयु में होती है।

42. कन्यालग्न में सूर्य कुंभ राशि में एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

43. कन्यालग्न में राहु-बुध+शनि द्वादश स्थान में हो, गुरु पंचम स्थान में हो तथा अन्य शुभ योग न हो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

44. कन्यालग्न के पंचम या छठे स्थान में सूर्य+बृहस्पति+राहु+मंगल हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

45. कन्यालग्न के आठवें स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

46. कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

47. कन्यालग्न के एकादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

48. कन्यालग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

49. कन्यालग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम स्थान में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

50. कन्यालग्न में षष्टेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

51. कन्यालग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ 'अकाल मृत्यु' को प्राप्त करता है।

❑❑❑

कन्यालग्न और धनयोग

कन्यालग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए शुक्र धनप्रदाता ग्रह है। धनेश शुक्र की शुभाशुभ स्थिति से, धन स्थान से संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, सूर्य एवं धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्त्रोतों तथा चल-अचल संपत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश बुध, पंचमेश शनि, भाग्येश शुक्र एवं लाभेश चंद्रमा की अनुकूल स्थितियां कन्यालग्न वाले व्यक्तियों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

वैसे कन्यालग्न के लिए मंगल, गुरु, चंद्र अशुभ होते हैं। अकेला शुक्र शुभ फलदायक होता है। शुक्र और बुध योग कारक हैं। मंगल अष्टमेश होने से सहमारकेश है। कन्यालग्न के लिए सूर्य मारक का काम करेगा पर वह अकेला नहीं मारेगा मंगल वगैरह पाप ग्रह मारकेश के सहयोगी बनेंगे।

राजयोगकारक–गुरु, शुक्र

सफल योग– 1. बुध+शुक्र, 2. बुध+शनि

अशुभ योग– 1. बुध+मंगल, 2. बुध+गुरु, 3. बुध+चंद्र

निष्फल योग–1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि

लक्ष्मी योग–शुक्र केन्द्र त्रिकोण में, चंद्रमा सप्तम में, बुध लग्न या दशम में।

विशेष योगायोग

1. कन्यालग्न में, लग्न में बुध के साथ शुक्र व शनि हो अथवा लग्न में स्थित बुध को शुक्र, शनि देखते हों तो जातक शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

2. कन्यालग्न में पंचम स्थान में शनि, लाभ स्थान में कर्क का बुध हो तो जातक अपनी विद्या या हुनर के द्वारा धन कमाता हुआ शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

3. कन्यालग्न में शुक्र यदि वृष, तुला या मीन राशि में हो तो व्यक्ति धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।

4. कन्यालग्न में शुक्र, बुध के घर में तथा बुध, शुक्र के घर में अर्थात् शुक्र, मिथुन या कन्या राशि में तथा बुध, वृष या तुला राशि में हो तो व्यक्ति जीवन में व्यापार के द्वारा खूब धन कमाता हुआ लक्ष्मीवान होता है।

5. कन्यालग्न में शुक्र चंद्रमा के घर में तथा चंद्रमा शुक्र के घर में अर्थात् चंद्रमा वृष या तुला राशि में हो तो शुक्र, कर्क राशि में हो तो जातक महाभाग्यशाली होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्य के जोर से खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी दासी रहती है।

6. कन्यालग्न में शुक्र, वृष, तुला या मीन राशि का हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत रुपया कमाता है तथा इनका भाग्योदय प्रायः विवाह के बाद होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

7. कन्यालग्न में बुध यदि केन्द्र त्रिकोण में हो तथा शुक्र स्वगृही हो तो कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी व्यक्ति धीरे-धीरे अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति बन जाता है।

8. कन्यालग्न में बुध लग्नगत हो तथा गुरु का शनि से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है।

9. कन्यालग्न में पंचमस्थ शनि स्वगृही हो तथा लाभ स्थान में सूर्य-चंद्रमा हो तो जातक महालक्ष्मीवान होता है। उसके पास खूब रुपया एवं सम्पत्ति होती है।

10. कन्यालग्न में बुध, कर्क राशि में हो तथा चंद्रमा लग्न में हो तो जातक 33 वर्ष की आयु में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

11. कन्यालग्न हो, लग्नेश बुध, धनेश शुक्र, भाग्येश शुक्र तथा लाभेश चंद्रमा अपनी-अपनी उच्च एवं स्वराशि में हों तो व्यक्ति करोड़पति होता है।

12. कन्यालग्न में राहु, शुक्र, मंगल और शनि चार ग्रहों की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

13. कन्यालग्न में धनेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो "धनहीन योग" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपये की कमी रहती है। इस योग की निवृत्ति हेतु गले में अभिमंत्रित "शुक्र यंत्र" धारण करना चाहिये। (पाठक चाहे तो "शुक्र यंत्र" हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।)

14. कन्यालग्न में धनेश शुक्र यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

15. कन्यालग्न में मंगल पंचम स्थान में मकर राशि का हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

16. कन्यालग्न में सुखेश गुरु, लाभेश चंद्र नवम भाव में एवं मंगल से दृष्ट हो तो जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

17. कन्यालग्न में गुरु+चंद्र की युति तुला, धनु, मकर या वृष राशि से हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

18. कन्यालग्न में धनेश शुक्र अष्टम में एवं अष्टमेश मंगल धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

19. कन्यालग्न में तृतीयेश मंगल लाभ स्थान में एवं लाभेश चंद्र तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदार एवं मित्रों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

20. कन्यालग्न में बलवान शुक्र के साथ यदि चतुर्थेश गुरु की युति हो तो व्यक्ति को माता के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. लग्नेश बुध, आयेश चंद्र तथा पंचमेश तीनों अष्टम भाव में हो सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो अर्थात् उच्च का व केन्द्र में तो ऐसे जातक का भाग्य ससुराल से बनता है धन भी मिलता है।

22. शुक्र व केतु दूसरे भाव में हो तो व्यक्ति धनाढ्य होता है तथा उसे आकस्मिक ढंग से अर्थ की प्राप्ति होती है।

23. कहीं भी सूर्य-शुक्र या सूर्य-चंद्र साथ बैठे हो तो सूर्य की दशा में विशेष धन लाभ, सम्मान एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

24. कन्यालग्न हो, लग्न से दूसरे स्थान में चंद्रमा, गुरु और शुक्र हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय 25 वर्ष की आयु के बाद होता है। अर्थात् ऐसा जातक 25 वर्ष की आयु के बाद धन कमाता है।

25. सूर्य यदि अपनी उच्च राशि मेष का परमोच्च अंश में हो और शुक्र 12वें स्थान में हो तथा उस पर शुभ स्थान के स्वामी की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय वृद्धावस्था में होता है। अर्थात् ऐसा जातक वृद्धावस्था में धन कमाता है।

26. चंद्रमा 10वें स्थान में मिथुन राशि का हो, दशमेश बुध लग्न में हो तथा भाग्येश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक धनवान, भाग्यवान व उच्च पदाधिकारी होता है।

27. कन्यालग्न में सूर्य-चंद्रमा यदि कुम्भ राशि में हो तीन-चार ग्रह नीच के हों तो व्यक्ति करोड़पति के घर में जन्म लेकर भी दरिद्री होता है।

28. कन्यालग्न में यदि बलवान शुक्र की पंचमेश शनि से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

29. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की यदि षष्टेश शनि से युति हो तथा धन भाव पर मंगल की दृष्टि हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट कचहरी में शत्रुओं को पराजित करता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

30. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की यदि सप्तमेश गुरु से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

31. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की बुध से युति हो तथा नवम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक राजा, से राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों, अनुबंध (ठेकों) से काफी धन कमाता है।

32. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की दशमेश बुध से युति हो, दशम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा अर्जित धन की प्राप्ति होती है। ऐसे जातक के लिए पिता का व्यवसाय भाग्योदय में सहायक होता है।

33. कन्यालग्न में दशम भवन का स्वामी बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पता, उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

34. कन्यालग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा सूर्य यदि छठे स्थान में कुम्भ राशि का हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती है।

35. कन्यालग्न में धन भाव में यदि पाप ग्रह हो तथा लाभेश चंद्रमा यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

36. कन्यालग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा यदि बृहस्पति से छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

37. कन्यालग्न में धनेश शुक्र यदि अस्त हो, नीच राशि (कन्या) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता ही नहीं।

38. कन्यालग्न में लाभेश चंद्रमा यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो, तथा लाभेश अस्तगत हो, पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

39. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अत: सावधान रहें।

40. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

कन्यालग्न और विवाहयोग

1. लग्नेश बुध, आयेश चंद्र तथा पंचमेश तीनों अष्टम भाव में हो सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो अर्थात् उच्च का व केन्द्र में हो तो ऐसे जातक का भाग्य ससुराल से बनता है तथा धन भी मिलता है।
2. कन्यालग्न हो तथा चंद्रमा द्वादश भाव में हो तो जातक की प्रसिद्धि विपक्षियों में खूब होती है। दाम्पत्य जीवन सुखी एवं आय के अनेक स्रोत होते हैं। यात्राएं खूब करता है।
3. कन्यालग्न हो तथा चंद्र-शुक्र सप्तम भाव हों, गुरु 11वें भाव में, सूर्य अष्टम भाव में हो तो व्यक्ति को श्रेष्ठतम ससुराल से अर्थ प्राप्ति व गुणोग्य पत्नी प्राप्त होती है।
4. कन्या राशि का सूर्य लग्न में हो, सप्तम (मीन) शनि हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु होगी।
5. शुक्र सुख स्थान में हो तथा सप्तम भाव में शनि एवं एकादश स्थान में मंगल हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु अग्नि से होती है।
6. यदि सप्तम में चद्रमा व शनि हो तो जातक की पत्नी पर प्रिया होती है।
7. कन्यालग्न हो, सप्तम में मीन का मंगल हो और मंगल शनि की युति हो तो जातक स्त्रीहीन, पुत्रहीन होता है।
8. शुक्र मीन का सप्तम स्थान में हो, वह शुक्र, मंगल या शनि के षड्वर्ग में हो, या शनि मंगल से दृष्ट हो, तो जातक परस्त्रीगामी होता है।
9. सातवें भाव में चंद्रमा, मंगल और शनि एक साथ हों और शुक्र-शनि मंगल के वर्ग में बैठकर उनको देखता हो तो जातक तथा उनकी पत्नी दोनों अन्य गामी होते हैं।
10. स्त्री की कुण्डली हो तथा कन्यालग्न हो लग्न या चंद्रमा से सप्तम स्थान में कोई ग्रह न हो और वह स्थान दुर्बल बन जाये तो स्त्री का पति का पुरुष अर्थात् भीरु होता है।

11. स्त्री की कुण्डली में (कन्यालग्न) सप्तम भाव में मंगल हो तो वैधव्य योग होता है। सूर्य हो तो पति द्वारा त्याज्य, शनि हो और पाप ग्रह की दृष्टि हो तो विवाह देर से हो अन्य पाप ग्रह भी वैधव्य योग बनाते हैं।

12. सप्तमेश सप्तम में बुध युक्त हो, राहु लग्न में तथा शनि स्व का मकर राशि का हो तो जातक नपुंसक या पुरुषत्वहीन हो।

13. कन्यालग्न में शनि लग्नस्थ, चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।

14. कन्यालग्न में शनि द्वादशस्थ हो, सूर्य द्वितीय भाव में हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

15. कन्यालग्न में शनि छटे हो, सूर्य अष्टम में हो तथा सप्तमेश बृहस्पति बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

16. कन्यालग्न में सूर्य, शनि और शुक्र की यति हो तो सप्तमेश, बृहस्पति भी बलहीन हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।

17. कन्यालग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।

18. कन्यालग्न में राहु या केतु हो, शुक्र, मिथुन, सिंह, कन्या, धन (बन्ध्या) राशिगत हो तो विवाह विलम्ब से होता है तथा जातक को अपने जीवनसाथी से तृप्ति नहीं मिलती।

19. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रह से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

20. कन्यालग्न में द्वितीयेश शुक्र वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

21. कन्यालग्न में सप्तमेश गुरु वक्र हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो, अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आता है। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

22. कन्यालग्न में सप्तमेश बृहस्पति स्वराशिगत, उच्च का अथवा उच्चाभिलाषी हो तो जातक एक पत्नीव्रत एवं भारतीय परम्परा में विश्वास रखता है। आयु के 34वें वर्ष में जातक को विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति होती है। ससुराल से प्रचुर धन एवं मान मिलता है।

23. कन्यालग्न में राहु यदि आठवें स्थान में हो तो ऐसी स्त्री को वैधव्य दुःख भोगना पड़ता है।

24. कन्यालग्न में मंगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्री प्रायः प्रेम विवाह करती है तथा स्वछन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।

25. कन्यालग्न में चंद्रमा बारहवें हो, शुक्र शनि के साथ हो, शुक्र से दूसरे स्थान पर सूर्य हो, चौथे राहु हो तो जातक को भरी जवानी में पत्नी व बच्चे का वियोग देखना पड़ता है। उसके पत्नी व बच्चे की अकाल मृत्यु होती है।

26. कन्यालग्न में गुरु शनि के साथ हो, राहु चंद्र बारहवें हो, सप्तम भाव शुभ ग्रहों से दृष्टि गोचर न हो तो ऐसी कन्या युवावस्था के बीत जाने पर, पर पति को तरसती रहती है, उसका विवाह नहीं होता।

27. कन्यालग्न में बृहस्पति यदि सातवें हो तो जातक की पत्नी बहुत ही सुन्दर व आकर्षक होगी। ऐसे जातक की पत्नी पति के भाग्य को चमकाने वाली, स्त्री परायण एवं पतिव्रता होती है।

28. कन्यालग्न में षष्ठेश शनि लग्न में बुध के साथ हो तो ऐसा पुरुष स्त्री सहवास के योग्य नहीं होता अर्थात् नपुंसक होता है।

29. कन्यालग्न में षष्टेश शनि के साथ मंगल लग्न या दशम भाव में हो तो ऐसा पुरुष स्त्री सहवास के योग्य नहीं होता अर्थात नपुंसक होता है।

30. कन्यालग्न में बुध उच्च का एवं गुरु बारहवें जिस कन्या की कुण्डली में हो वह राजपत्नी अथवा रानी के समान ऐश्वर्य को भोगने वाली होती है तथा उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में होती है।

31. कन्यालग्न में शुक्र सप्तम भाव में दो पाप ग्रहों के मध्य हो अथवा दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री घर छोड़कर स्वेच्छा से व्यभिचार कर्म करती है।

32. कन्यालग्न में द्वितीयेश शुक्र यदि राहु से युत हो तो ऐसी स्त्री व्यभिचारी हो सकती है।

33. कन्यालग्न में चंद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत कोमल एवं मृदु स्वभाव की होती है।

34. कन्यालग्न में गुरु, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात, विदुषी एवं सच्चरित्र वाली सभ्य महिला होती है।

35. जातक पारिजात के अनुसार कन्यालग्न में उत्पन्न कन्याएं सुन्दर होती हैं। चंद्रमा यदि लग्न में हो तो ऐसी स्त्री पति की प्रिया, प्राणवल्लभा होती है।

36. कन्यालग्न में बुध स्वगृही लग्न में अष्टमेश मंगल के साथ हो तो ''द्विभार्या योग'' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

37. कन्यालग्न में सप्तमेश बृहस्पति यदि द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों से संभोग करता है।

38. कन्यालग्न में सूर्य और शनि यदि सातवें हो तो ऐसे जातक की पत्नी अल्पजीवी होती है।

❑❑❑

कन्यालग्न और संतान योग

1. कन्यालग्न में चंद्रमा नवम भाव में वृष राशि का हो तो जातक का एक पुत्र होता है।
2. कन्यालग्न में पंचमेश शनि यदि आठवें हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
3. कन्यालग्न में पंचमेश शनि अस्त हो या पाप ग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो जातक के यहां पुत्र नहीं होता।
4. कन्यालग्न में पंचमेश शनि लग्न (कन्या राशि) में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. कन्यालग्न में पंचमस्थ शनि मकर राशि का हो तो व्यक्ति के तीन पुत्र होते हैं। यदि साथ में सूर्य हो तो चार पुत्र होते हैं।
6. कन्यालग्न में पंचमेश शनि लग्न में हो तथा लग्नेश बुध पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरों की संतान गोद लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
7. कन्यालग्न में पंचम भाव में शनि हो तो जातक के यहां सात पुत्रियां होती हैं।
8. कन्यालग्न हो, पंचम भाव में शनि यदि चंद्र, शुक्र या बुध द्वारा देखा जाता हो तो जातक के आठ पुत्रियां होती हैं। इसके साथ ही पंचम भाव पर यदि किसी पुरुष ग्रह की दृष्टि हो तो ईश्वर की कृपा से एक पुत्र भी हो जाता है।
9. कन्यालग्न में पंचमेश शनि पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय करने से दोष की शांति हो जाती है।
10. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं।

11. कन्यालग्न में पंचमेश शनि कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक के यहां वृद्धावस्था में संतान होती है।

12. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

13. कन्यालग्न में लग्नेश बुध द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश शनि पाप ग्रस्त अथवा पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।

14. कन्यालग्न में पंचमेश शनि बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

15. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या राशि की प्राप्ति होती है।

16. कन्यालग्न में पंचमेश शनि की सप्तमेश गुरु से युति हो तो जातक के प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

17. सूर्य और चंद्रमा लग्न में 6/12 में हो। 6ठे सूर्य, 12वें चंद्रमा या 12वें भाव में सूर्य व 6ठे भाव में चंद्रमा हो तो पत्नी पति दोनों काने हों तथा 1 ही पुत्र होता है।

18. कन्यालग्न हो, सप्तम में मीन का मंगल हो और मंगल शनि की युति हो तो जातक स्त्रीहीन, पुत्रहीन होता है।

19. चंद्रमा वृष, सिंह, कन्या या वृश्चिक राशि का हो तो संतान कम होती है।

20. सम राशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

21. पंचमेश शनि निर्बल हो, लग्नेश बुध भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक के यहां सर्प दोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

22. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्म नामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के यहां पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।

23. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

24. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम से सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

25. कन्यालग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहा बैठा हो उससे आठवें स्थान मे पाप ग्रह हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलती।

26. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

27. कन्यालग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

28. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के यहां जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

29. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

30. जिस स्त्री का जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

31. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

32. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

कन्यालग्न और राजयोग

1. जिसका जन्म लग्न पूर्णांश पर कन्या हो, उसमें उच्च का बुध विराजमान हो, चतुर्थ स्थान में गुरु, शुक्र, चंद्रमा और पंचम स्थान में शनि मंगल हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. उच्च का बुध लग्न में, उच्च का मंगल शनि के साथ पंचम स्थान में, स्वगृही मीन का गुरु चंद्रमा के साथ सप्तम भाव में तथा मिथुन का शुक्र दशम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. मकर का शनि, मंगल के साथ पंचम स्थान में हो, मीन का शुक्र सप्तम में हो मिथुन का बुध दशम स्थान में हो और कर्क का बृहस्पति लाभ या एकादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का बुध लग्न में, स्वगृही शुक्र धन भाव में, वृश्चिक का मंगल पराक्रम या तीसरे स्थान में और धन का स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. उच्च का मंगल पंचम स्थान में, कुम्भ का शनि छठे स्थान में, मीन का गुरु सप्तम स्थान में और वृष या उच्च का चंद्रमा भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. मीन का गुरु सप्तम में, वृष का शुक्र नवम में, मिथुन का बुध दशम में तथा कर्क का चंद्रमा एकादश में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का शुक्र सप्तम में, उच्च का चंद्रमा नवम में, स्वगृही बुध दशम तथा उच्च का गुरु एकादश में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
8. उच्च का बुध लग्न में, उच्च का शनि धन में, स्वगृही गुरु चतुर्थ में तथा उच्च का मंगल पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

9. उच्च का शनि धन में, स्वगृही गुरु सप्तम में, उच्च का चंद्रमा भाग्य स्थान में स्वगृही बुध दशम या राज्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

10. उच्च का शनि धन में, उच्च का चंद्रमा भाग्य स्थान एवं उच्च का गुरु लाभ में हो तो जातक राजा के सामन ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

11. उच्च का शुक्र सप्तम में हो तो या उच्च का बुध लग्न में हो, तीसरे भाव में स्वगृही मंगल के साथ सूर्य हो, कुम्भ का स्वगृही शनि छटे स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

12. मीन स्वगृही बृहस्पति सप्तम स्थान में हो तो जातक के शत्रु दबे रहते हैं और वह स्वयं बड़ा आदमी होता है।

13. यदि कन्यालग्न में उच्च का बुध हो, पंचम स्थान में मकर का मंगल या शनि हो, सप्तम स्थान में गुरु चंद्रमा मीन राशि में हो और वृष राशि का शुक्र भाग्य स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा राज्य कर्मचारी होता है। तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

14. कन्यालग्न में बुध हो मकर का मंगल पंचम में शुक्र मीन का सप्तम, गुरु और चंद्रमा धन राशि का चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

15. कन्यालग्न हो तथा शुक्र-बुध यदि नवम भाव में या 10वें भाव में हो तो दशमेश नवम भाव में न नवमेश 10वें भाव में या नवमेश नवम व दशम भाव में हो तो, चारों अवस्थाओं में उत्तर राजयोग होता है।

16. पंचमेश व दशमेश या तो पंचम स्थान में हो या दशम स्थान में अथवा परस्पर स्थान परिवर्तन हो या दोनों स्वगृही हो तो भी उत्तम राजयोग होता है।

17. दशमेश दशम भाव में हो, सूर्य उच्च का हो तथा 9वें भाव में गुरु हो, मीन राशि का चंद्रमा हो तो पूर्ण राजयोग होता है।

18. भाग्येश पंचम स्थान में हो तथा पंचमेश द्वितीय भाव में उच्च का हो और द्वितीयेश शुक्र अपनी उच्च राशि मीन में सप्तम स्थान में हो जातक गुणी होता है तथा उच्च पदाधिकारी होता है।

19. चंद्रमा 10वें स्थान में मिथुन राशि का हो, दशमेश बुध लग्न में हो तथा भाग्येश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक धनवान, भाग्यवान व उच्च पदाधिकारी होता है।

20. कन्यालग्न हो, उच्च का बुध, मंगल, शनि 5वें भाव में हो चतुर्थ स्थान में चंद्रमा, गुरु व शुक्र हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

21. लग्नेश उच्च का लग्न में, गुरु, शुक्र चतुर्थ भाव में अन्य ग्रह लग्न में द्वितीय, नवम् या उपचय (3, 6, 10, 11) में हो तो उत्तम राजयोग होता है।

22. कन्यालग्न में बुध हो, शुक्र दशम में, सप्तम में बृहस्पति तथा चंद्रमा हो। लग्न में पंचम मंगल शनि से युक्त हो तो राजयोग होता है।

23. कन्यालग्न में मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4/7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण, सुन्दरी स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश नगर, देखने में व्यस्त राजा होता है।

24. कन्यालग्न में जन्म समय में सिंह, वृष, कन्या, कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से सम्पन्न होता है। राहु उच्च में हो तो हाथी, घोड़ा मनुष्य तथा नाव की सवारी वाला, जमीन वाला, पंडित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है।

25. कन्यालग्न में दसवें में बुध-सूर्य हो और मंगल-राहु छठे में हो तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

26. कन्यालग्न में चंद्रमा लाभ स्थान में शुक्र बृहस्पति के साथ मंगल उच्च का मकर राशि के शनि के साथ हो और लग्न में कन्या का बुध हो तो बहुत विद्वान होकर राजयोग होता है।

27. कन्यालग्न में धन का बृहस्पति चंद्रमा से युक्त, मकर का मंगल और लग्न में उच्च का शुक्र अथवा बुध हो तो राजयोग होता है।

28. कन्यालग्न में उच्च का बुध, मीन का बृहस्पति, मिथुन का चंद्रमा, मकर का मंगल शनि, मिथुन का शुक्र हो तो वैभव सम्पन्न राजयोग होता है।

❑❑❑

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में

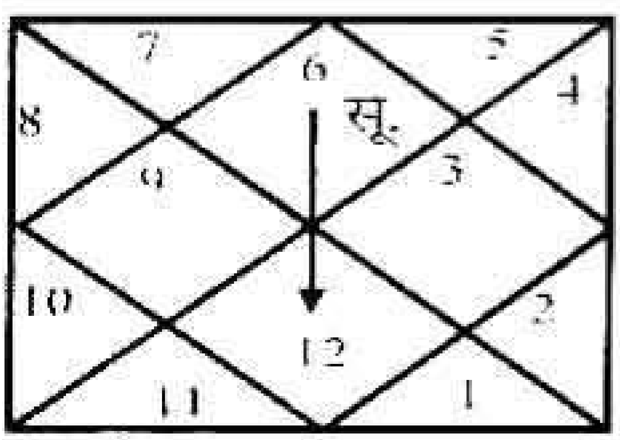

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां प्रथम स्थान में सूर्य कन्या राशि अपनी मित्र राशि में है। ऐसे जातक बुद्धिमान, उच्च कोटि के लेखक, आलोचक, पत्रकार, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक होते हैं। ऐसे जातक दृढ़ इच्छा शक्ति वाले एवं अन्याय के प्रति न झुकने वाले हठी होते हैं। जातक राज्याधिकारी होता है, पर तनाव में रहता है।

दृष्टि–सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक की पत्नी धार्मिक किन्तु थोड़े उग्र स्वभाव की होगी।

निशानी–जातक फिजूल खर्ची होता है। जातक धन एवं विद्या (ज्ञान) संग्रह के प्रति लापरवाह होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के समय 5 से 7 बजे के मध्य होता है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। इन दोनों ग्रहों की

दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक पराक्रमी होगा। उसकी पत्नी सुन्दर होगी, स्वामीभक्त होगी।

2. **सूर्य + मंगल**—मंगल की युति से जातक परम पराक्रमी होगा।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। प्रथम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां उच्च का होकर 'भंग योग व कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगा। यहां पर यह युति उत्तम फल (राजयोग) को देने वाली होगी। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा एवं राजातुल्य ऐश्वय, पराक्रम एवं वैभव को भोगेगा। जातक धनवान, बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वमी होगा। जातक अपने कुल, परिवार, जाति का मुखिया एवं अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—जातक भाग्यशाली होगा। राजा का प्रमुख व्यक्ति किंवा राजनेता होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—जातक धनी होगा।
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: पंचमेश षष्टेश शनि की व्ययेश सूर्य के साथ निष्फल युति है। जातक अति महत्वकांक्षी, चालाक एवं विचलित मन-मस्तिष्क वाला होगा। जातक के शरीर में बीमारी रहेगी।
7. **सूर्य + राहु**—जातक अत्यधिक साहसी एवं पराक्रमी होगा।
8. **सूर्य + केतु**—जातक गर्म मिजाज वाला होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

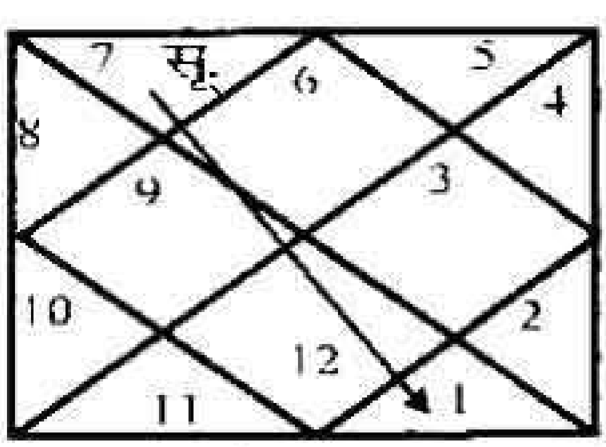

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। द्वितीय स्थान में सूर्य तुला राशि में नीच का होगा। तुला राशि अंशों पर सूर्य परम नीच का होगा। जातक को विद्या, बुद्धि, धन और कुटुम्ब के सुख में कुछ न कुछ कमी अखरती रहेगी। जातक का धन चोर, अग्नि, टैक्स, जुआ, लॉटरी, सट्टा आदि कार्यों में नष्ट होता रहेगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी।

निशानी—सूर्य की यह स्थिति एक हजार राजयोग नष्ट करती है।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के पूर्व 4 से 5 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करता है। यहां दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है।
2. **सूर्य + मंगल**–जातक की वाणी में गर्मी व कड़वाहट होगी।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। द्वितीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा एवं धनवान भी होगा। जातक अपने स्वयं के पराक्रम एवं पुरुषार्थ से धन कमाता हुआ आगे बढ़ता है। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा रोग (बीमारी) से लड़ने की क्षमता रखता हुआ दीर्घजीवी होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–जातक धनी तथा धार्मिक होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–नीचभंग राजयोग के कारण जातक महाधनी व ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में शनि उच्च का एवं सूर्य नीच का होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर पैसा पास में टिकेगा नहीं। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अप्रिय रहेगी।
7. **सूर्य + राहु**–धन के घड़े में बड़ा छेद होगा।
8. **सूर्य + केतु**–कुटुम्ब एवं धन संग्रह में कष्टानुभूति होगी।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी

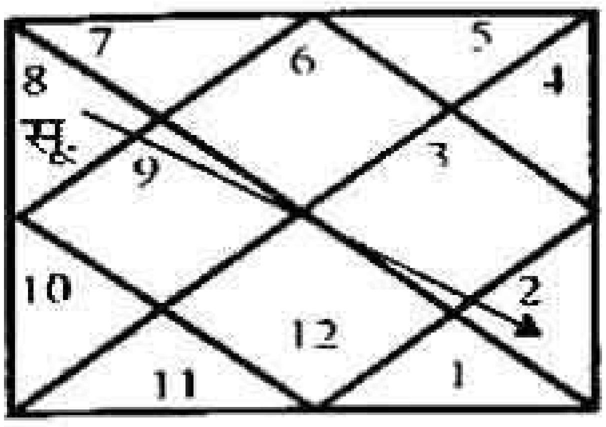

दे सकता है। यहां तृतीय स्थान में सूर्य वृश्चिक राशि का होगा। सूर्य अपनी (सिंह) राशि से चौथे स्थान पर होगा। फलत: जातक बहुत ही शूरवीर, परिश्रमी, साहसी एवं पराक्रमी होगा। जातक भौतिक एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होगा। ऐसा जातक परद्वेषी होता है। स्वयं के भाई-बहनों के मध्य अहं (Ego) का टकराव रहता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। फलत: व्यक्ति सौभाग्यशाली होगा। राजनीतिज्ञ होगा या उद्योगपति होगा।

निशानी–पाराशर ऋषि के अनुसार जातक के बड़े भाई की मृत्यु जातक के सामने होगी, अथवा बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी पर पराक्रम में वृद्धि करायेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस-पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा।
2. **सूर्य + मंगल**–सहोदर सुख में हानि होगी, छोटे भाई की मृत्यु संभव है।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। तृतीय स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान व पराक्रमी होगा। मित्रों एवं परिजनों से लाभ होगा। जातक अपने बुद्धिबल से 24 वर्ष की आयु तक अपना उन्नति कार्य निश्चित कर लेगा। जातक धनी व्यक्ति होगा तथा समाज में अपने कार्यों में अपनी पहचान अलग से बनायेगा।
4. **सूर्य + गुरु**–जातक के भाई पराक्रमी एवं धार्मिक होंगे।
5. **सूर्य + शुक्र**–जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा।

6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि की युति अप्रिय होगी। जातक को छोटे-बड़े किसी भाई से नहीं बनेगी। भाईयों का सुख कमजोर होगी। जातक के मित्र-परिजन भी विश्वास योग्य नहीं होंगे। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम (मकर राशि), नवम् (वृष राशि) एवं व्यय भाव (सिंह राशि) पर होने से संतति योग उत्तम पर संतानों में झगड़ा रहेगा। भाग्योदय में संघर्ष एवं खर्च की प्राबल्यता रहेगी।

7. **सूर्य + राहु**–भाईयों में विवाद रहेगा।

8. **सूर्य + केतु**–मित्रों में धोखा संभव है।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में

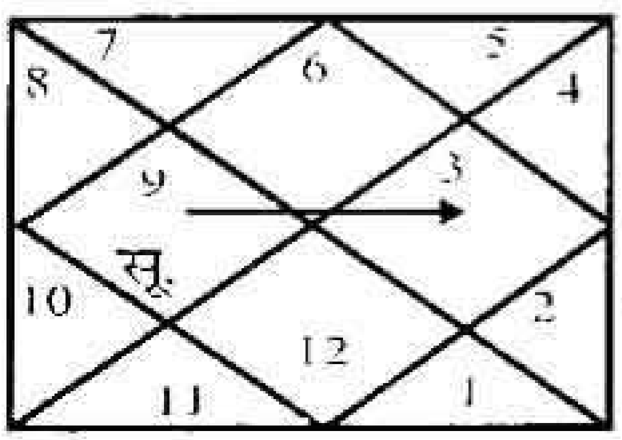

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां चतुर्थ स्थान में सूर्य धनु राशि में अपनी मित्र राशि में होगा। सूर्य अपनी (सिंह) राशि से पांचवे स्थान पर होने से शुभ फलदायक है। जातक को वाहन सुख मिलेगा। जातक उत्तम भवन का स्वामी होगा। जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा। परन्तु जातक एवं उसके माता-पिता ज्यादा भाग्यशाली नहीं होते। राजकीय हस्तक्षेप से जातक की खुशियां बरबाद हो सकती हैं।

दृष्टि–चतुर्थ स्थानगत सूर्य की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक का राजदरबार में दबदबा रहेगा।

निशानी–जातक को माता, घर, वाहन-सुख में कुछ-न-कुछ बाधा बनी रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां चतुर्थ सथान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म पौषकृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के पास वाहन भी होगा पर वाहन दुर्घटना से विकलांग होने का भय रहेगा।

2. **सूर्य + मंगल**—भौतिक सुखों में व्यवधान रहेगा।

3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध केन्द्रवर्ती होने के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा ज्योतिष, तंत्र व आध्यात्मिक विद्या का जानकार होगा। जातक उत्तम-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक के पास एकाधिक वाहन रहेंगे। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक व्यापार-व्यवसाय में कमायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**—यहां बृहस्पति स्वगृही होगा। फलतः जातक दीर्घायु होगा। जातक राजपक्ष व राजनीति में बहुमान्य होगा। जातक दानी होगा। परोपकार व सामाजिक कार्यों में जातक रुपया खर्च होगा।

5. **सूर्य + शुक्र**—व्यक्ति धनी एवं भाग्यशाली होगा।

6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न में चतुर्थ स्थान में सूर्य+शनि की युति से जातक की माता बीमार रहेगी। वाहन की दुर्घटना होगी। यहां धनु राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि) दशम भाव (मिथुन राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर रहेगी। फलतः जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक खुद की मेहनत से आगे बढ़ेगा, परन्तु उसके जीवन का सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक कृपण/कंजूस होगा।

7. **सूर्य + राहु**—जातक के माता-पिता बीमार रहेंगे। घरेलू सुख-सुविधाओं में बाधा बनी रहेगी।

8. **सूर्य + केतु**—जातक धन-सम्पत्ति, भौतिक सुखों से रहित होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

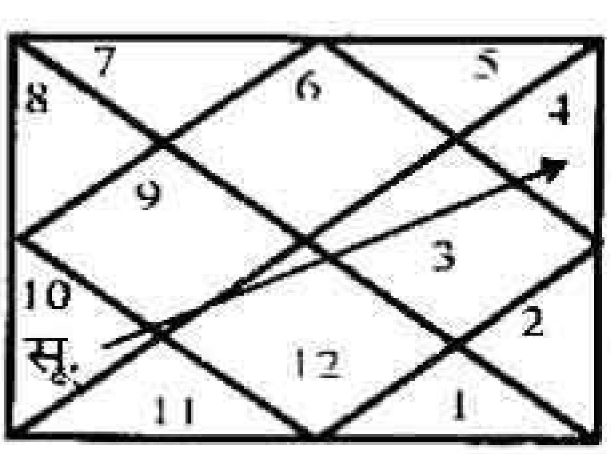

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां पंचम स्थान में सूर्य मकर (शत्रु) राशि में है। द्वादशेश पंचम में होने से पंचम भाव के शुभ फलों की हानि होती है। ऐसे जातक को विद्या एवं पुत्र संतति की प्राप्ति में विलम्ब होता है। ऐसा जातक हृदय रोग से पीड़ित होता है। लग्नेश (बुध) यदि बलवान न हो तो आयु कम रहती है।

दृष्टि–पंचम भावगत सूर्य की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: लाभ प्राप्ति में न्यूनता महसूस होती रहेगी।

निशानी–जातक का भाग्योदय संतान (पुत्र) के जन्म के बाद ही होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल नहीं देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि) को देखेंगे जो चंद्रमा का स्वयं का घर है। ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा परन्तु एकाध संतति का क्षरण, अकाल मृत्यु, गर्भपात संभव है।
2. **सूर्य + मंगल**–उच्च का मंगल व्यापार में लाभ दिलायेगा।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। पंचम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में स्थित 'कर्क राशि' को उत्पीड़ित करेगा, जो बुध की शत्रु राशि है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा एव समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–बृहस्पति यहां नीच का होगा। जातक विद्यावान होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–विद्या प्राप्ति में संघर्ष रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के पंचम स्थान में शनि स्वगृही होगा एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर उद्विग्न होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (कर्क राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी फलत: जातक प्रजावान तथा धनवान होगा, पर शत्रुओं की कमी नहीं होगी। खुद की संतान ही जातक से वैर भाव रखेगी। प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेगी।
7. **सूर्य + राहु**–संतान (पुत्र) प्राप्ति में बाधा होगी।
8. **सूर्य + केतु**–गर्भपात या गर्भस्राव संभव है।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

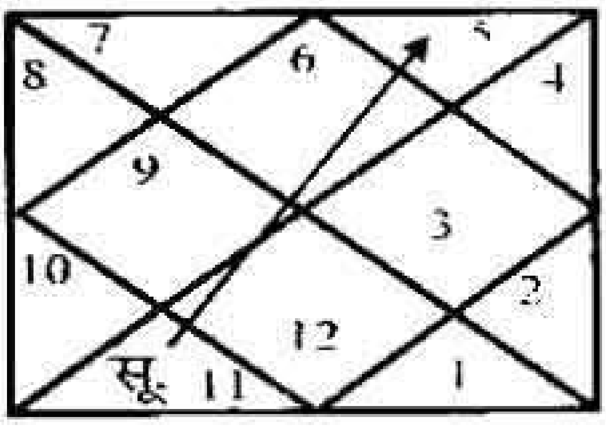

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां षष्टम स्थान में सूर्य कुम्भ राशि (शत्रु राशि) में है। द्वादशेश छठे होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक बहुत अच्छा राजनीतिज्ञ तथा सफल व प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। ऐसे जातक की सामाजिक व आर्थिक उन्नति चरम सीमा पर होती है। इस सूर्य को 'आग जला' कहते हैं। ऐसा जातक बेफिक्र होता है। ऐसे जातक को रुपये-पैसे की चिंता नहीं होती, वह क्रोध में आकर किसी का भी नुकसान कर सकता है। जातक को अपने-पराये का ध्यान नहीं रहता।

दृष्टि—षष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि अपने ही घर (सिंह राशि) व्यय भाव पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होता है।

निशानी—ऐसे व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु किसी की भी हानि कर सकते हैं।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा मध्यम (मिश्रित) फल देती है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या रात्रि 8 बजे के आस-पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। चंद्रमा छठे जाने से लाभभंग योग बना परन्तु व्ययेश सूर्य के छठे जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना, फलत: आर्थिक तंगी रहेगी। खर्च की अधिकता जातक को परेशान करती रहेगी। आर्थिक स्थिति का सही मूल्यांकन शुक्र की स्थिति से होगा।
2. **सूर्य + मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी-अभिमानी होगा।
3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। छठे स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+धनेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होकर व्यय स्थान को पूर्ण दृष्टि

से देखेगा। बुध छठे स्थान पर जाने से 'लग्नभंग योग', 'राजभंग योग' बना। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा पर उसे परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। सरकार में रुपया अटक जायेगा।

4. **सूर्य + गुरु**–विवाह विलम्ब से होगा। द्विभार्या योग बनता है।
5. **सूर्य + शुक्र**–
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा पर दोनों ही ग्रह यहां विपरीत राजयोग करके बैठेंगे। शनि के कारण हर्ष योग एवं सूर्य के कारण सरल योग बनेगा। जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का शमन करने में सक्षम होगा। जातक उत्तम धन-सम्पति एवं वाहन का स्वामी होगा।
7. **सूर्य + राहु**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी व अभिमानी होगा।
8. **सूर्य + केतु**–विपरीत राजयोग के कारण जातक साहसी होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

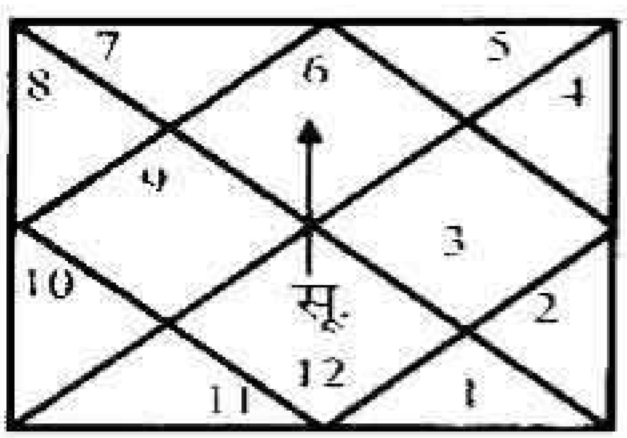

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां सप्तम स्थान में सूर्य मीन (मित्र) राशि में है। जातक उन्नतिशील होगा, पर हठी, द्वेषी एवं स्वतंत्र विचारों का पोषक होगा। ऐसे जातक का रंग गोरा व सिर पर बाल कम होंगे। जातक के मित्र कम होंगे एवं उनके साथ मित्रता निभाने में जातक को कठिनाई महसूस होगी। जातक सम्पन्न होगा। जातक का आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर मध्यम होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक द्वारा किये गये परिश्रम प्राय: सार्थक होंगे। जातक को मेहनत का फल मिलेगा।

निशानी–ऐसे जातक को परदेश में प्रसिद्धि मिलती है। जातक विदेशी वस्तुओं को पसंद करेगा। जातक की शादी विलम्ब से होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के

साथ निरर्थक युति है। यहां सातवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्रकृष्ण अमावस्या को सायंकाल सूर्यास्त के समय होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि) को देखेंगे। फलतः जातक उन्नति मार्ग की ओर बढ़ेगा। जातक की पत्नी सुंदर होगी पर झगड़ालू स्वभाव की होगी।

2. **सूर्य + मंगल**—जातक का दाम्पत्य जीवन कष्टदायक होगा।
3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। सप्तम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बुध नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा एवं 'लग्नाधिपति योग' भी बनेगा। फलतः जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा। जातक जिस कार्य में हाथ डालेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—'मालव्य योग' के कारण जातक राजातुल्य वैभवशाली होगा।
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के सप्तम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री एवं सूर्य मित्रक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलतः जातक का विवाह विलम्ब से होगा। जातक को गृहस्थ सुख में बाधा, भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति में भारी संघर्ष, भाग्योदय में संघर्ष, किसी भी कार्य में प्रथम प्रयास से सफलता नहीं मिलेगी।
7. **सूर्य + राहु**—जातक के दाम्पत्य जीवन में बिछोह की स्थिति बन सकती है।
8. **सूर्य + केतु**—जातक के गृहस्थ सुख में कड़वाहट रहेगी।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में

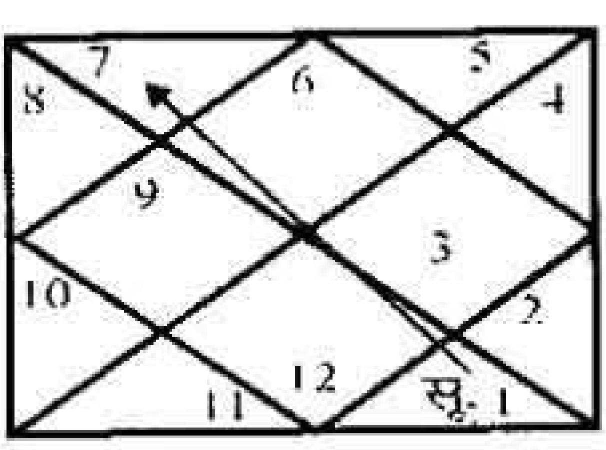

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां अष्टम स्थान में सूर्य मेष राशि में उच्च का है। मेष राशि के अंशों में सूर्य परमोच्च का होता है। व्ययेश सूर्य आठवें होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बनता है। ऐसे जातक की आयु लम्बी

होती है। जातक का शरीर स्वस्थ रहता है। जातक क्रोधी व महत्त्वकांक्षी होते हुए भी आकर्षक व कुशल वक्ता होता है। जातक अपने परिश्रम के बल पर धन, पद, प्रतिष्ठा को प्राप्त करते हैं, पर गलत सोहबत इन्हें बर्बाद कर देगी, इस बात पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

दृष्टि–अष्टम स्थानगत सूर्य की दृष्टि धन भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक को धन एकत्रित करने में कठिनाई महसूस होगी।

निशानी–ऐसा जातक मुसीबत में घिरे लोगों को बचाने में पूर्ण रुचि लेता है तथा 'शरणागत वत्सल' होता है। जातक अपनी शरण में आये व्यक्ति के लिए अपने प्राण भी न्यौच्छावर करने में नहीं हिचकिचायेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा। जातक को राजपक्ष में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सायंकाल चार बजे के लगभग होगा। सूर्य यहां उच्च का होगा। व्ययेश सूर्य के आठवें जाने से सरल नाम विपरीत राजयोग बनता है। जबकि चंद्रमा लाभभंग योग की सृष्टि करता है। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है। पर व्यापार में नुकसान उठाता है। दोनों ग्रहों की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक धनी व समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + मंगल**–इस युति से 'किम्बहुना योग' बनता है। जातक को अचानक धन मिलता है। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। अष्टम भाव में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। दोनों ग्रह धन भाव को देखेंगे। फलत: यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। बुध के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा। फलत: जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। मेहनत का फल नहीं मिलेगा फिर भी जातक बुद्धिमान होगा। व्ययेश सूर्य बारहवें जाने से 'विमल योग' बना। ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**–जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के अष्टम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री नीच का तो सूर्य उच्च का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। यहां शनि के कारण **'हर्ष योग'** एवं सूर्य के कारण सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पंचम भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक पुत्रवान एवं महाधनी होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने वाला होगा।
7. **सूर्य + राहु**–जातक दीर्घायु होगा। वह धनी होगा।
8. **सूर्य + केतु**–जातक धनी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति नवम् स्थान में

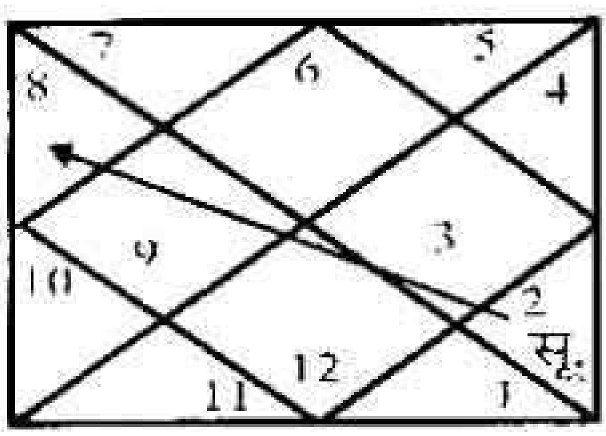

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां नवम स्थान में सूर्य वृष (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक सौभाग्यशाली एवं प्रतिष्ठावान होते हैं तथा अपने खानदान की प्रतिष्ठा के लिए सब कुछ कुर्बान करने को तैयार रहते हैं। परन्तु अन्त:करण से स्वार्थी होते हैं। जातक का भाग्योदय 25 वर्ष की आयु के बाद ही होता है। ऐसा जातक यदि कुछ भी गलत, अनैतिक अचारण करेगा तो यह सूर्य उसे दण्डित करने में जरा भी रहम नहीं करेगा।

दृष्टि–नवम स्थानगत सूर्य की दृष्टि पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा।

निशानी–ऐसे जातक का भाग्योदय प्राय: विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अपने पिता के विचारों का सम्मान नहीं करता।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के

साथ निरर्थक युति है। यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर दो बजे के आस-पास होगा। यहां बैठे दोनों ग्रह पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली एवं प्रबल पराक्रमी होगा। यहां चंद्रमा उच्च का होने से 'चन्द्रकृत राजयोग' बनेगा। ऐसे जातक को मित्रों एवं व्यापारी वर्गीय लोगों से लाभ होगा।

2. **सूर्य + मंगल**–अष्टमेश भाग्य स्थान में होने से जातक के भाग्योदय में प्रारंभिक संघर्ष रहेगा।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। नवम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति भी मिलेगी। जातक को मित्रों, परिजनों का सहयोग मिलता रहेगा।
4. **सूर्य + गुरु**–जातक धार्मिक होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–जातक महाभाग्यशाली होगा।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के नवम स्थान में शनि मित्र राशि में हो तो सूर्य शत्रु राशि में होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं छठे स्थान (कुम्भ राशि) को देखेंगे। ऐसे जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
7. **सूर्य + राहु**–जातक का भाग्योदय रुकावट के साथ होगा।
8. **सूर्य + केतु**–जातक का जीवन संघर्षपूर्ण होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में

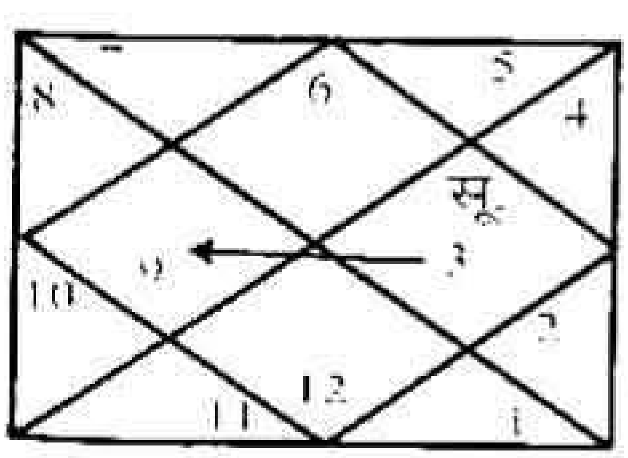

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। दशम स्थान में सूर्य मिथुन (मित्र) राशि में है। यहां सूर्य दिक्बल को प्राप्त है। जिसके कारण उसके द्वादशेश होने

का पापत्व नष्ट हो गया है। ऐसा जातक समाज का प्रभावशाली धनी व मानी व्यक्ति होगा। उसके जीवन में सभी कार्यों में उसे लगातार सफलता मिलती रहेगी। जातक तीव्र बुद्धि वाला इष्टबली होगा। उसे पुत्र, सवारी और प्रसिद्धि सभी बराबर मात्रा में मिलेंगे।

दृष्टि–दशम भावगत सूर्य की दृष्टि सुख स्थान धनु राशि पर होगी, फलतः जातक को माता-पिता का सुख एवं सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में शीघ्र आगे बढ़ते हैं।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा एवं सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या दोपहर 12 बजे के आस-पास होता है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को माता-पिता की आंशिक सम्पत्ति मिलती है। जातक का सरकार में, राजनीति में दबदबा रहता है।
2. **सूर्य + मंगल**–राज्यपक्ष में विरोध रहेगा।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। दशम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा। फलतः 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि हो रही है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां यह युति ज्यादा खिलेगी। जातक बुद्धिमान एवं राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। राज्य में इसका वर्चस्व होगा। जातक की खुद की गाड़ी व बंगला होगा। जातक कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **सूर्य + गुरु**–जातक धार्मिक स्वभाव का होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–जातक भाग्यशाली होगा।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के दशम स्थान में शनि व सूर्य दोनों ही केन्द्रवर्ती होकर मित्रक्षेत्री होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि), चतुर्थ भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलतः राज्य पक्ष (सरकार) से विवाद रहेगा। शत्रुनाश एवं कोर्ट-कचहरी को लेकर धन खर्च

होगा। जातक की माता एवं पत्नी बीमार रहेगी। जातक की पिता के साथ विचारधारा नहीं मिलेगी।

6. **सूर्य + राहु**–जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **सूर्य + केतु**–जातक को सरकारी काम-काज में विफलता मिलेगी।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में

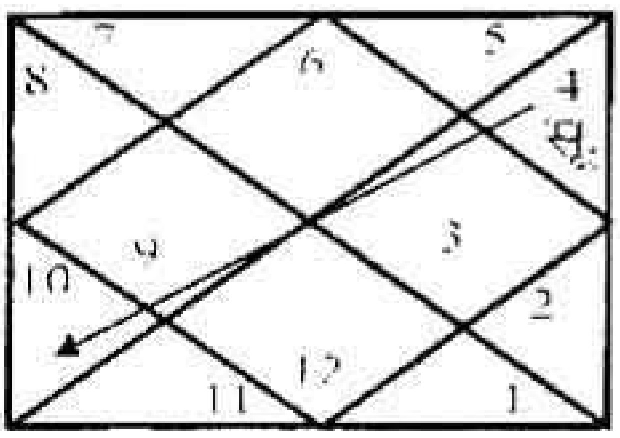

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। एकादश स्थान में सूर्य कर्क (मित्र) राशि में है। अपनी राशि (सिंह) में द्वादश स्थान में होने से इसका पापत्व नष्ट हो गया है। ऐसा जातक काफी धनी होगा एवं उसकी आयु लम्बी होगी। जातक को पत्नी, पुत्र और नौकरों का पूर्ण सुख मिलेगा। उसे राज्य एवं सरकारी क्षेत्र में पूरा सहयोग मिलेगा। ऐसे जातक को अल्प प्रयत्न से ही पूर्ण सफलता मिलती है।

दृष्टि–एकादश स्थानगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक की संतति सुयोग्य होगी।

निशानी–जातक को पुत्र सुख जरुर मिलेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक सर्वांगीण उन्नति, यश व धन की प्राप्ति करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सुबह दस बजे के आस-पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव मकर राशि को देखेंगे। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। ऐसा जातक पढ़ा-लिखा होता है। उसे पुत्र-पुत्री दोनों की प्राप्ति होती है। जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
2. **सूर्य + मंगल**–मंगल यहां नीच का होगा। बड़े भाई के सुख में हानि होगी।

3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। एकादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान व शिक्षित होगा। उसकी संतान भी शिक्षित होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जातक व्यापारी होगा। उसकी रुचि व्यापार में होगी तथा व्यापार से धन की प्राप्ति होगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**–गुरु यहां उच्च का होगा। बड़े भाई का पूर्ण सुख होगा।

5. **सूर्य + शुक्र**–बड़ी बहन का सुख होगा।

6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के एकादश में शनि व सूर्य दोनों शत्रुक्षेत्री होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलत: लाभ में कमी होगी, जातक का मन-मस्तिष्क अस्थिर रहेगा। जातक की संतान पढ़ी-लिखी होगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त होगा।

6. **सूर्य + राहु**–लाभ में हानि। उद्योग में घाटा होगा।

7. **सूर्य + केतु**–लाभ में कमी महसूस होगी।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

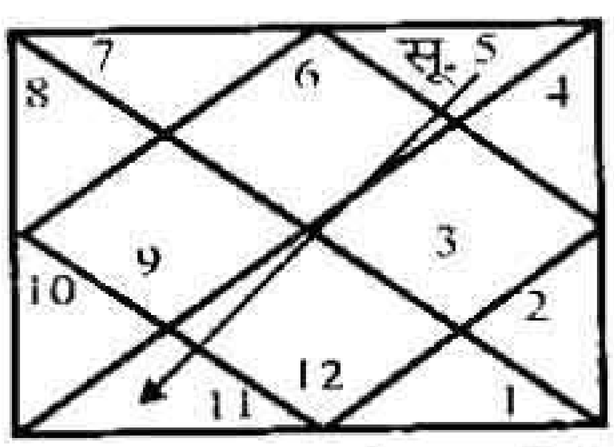

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां द्वादश स्थान में सूर्य सिंह राशि में स्वगृही है। सिंह राशि में अंशों में सूर्य मूल त्रिकोण का कहलाता है। व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनता है। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु का सम्पूर्ण नाश करने में समर्थ होता है। ऐसा जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक परोपकार, धर्म व अध्यात्म के कामों में रुपया खर्च करता है।

दृष्टि–व्यय भावगत सूर्य की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक शत्रुहन्ता होता है। जातक अपने द्वेषी को कभी क्षमा नहीं करता है।

निशानी–जातक के बायें नेत्र में विकार हो सकता है। जातक क्रोधी होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक अधिक यात्राएं करेगा तथा धन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को प्रात: ४ बजे के आस पास होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। चंद्रमा बारहवें होने से 'लाभभंग योग' बना। फलत: जातक को व्यापार में लाभ की कमी महसूस होगी। जातक को नेत्र पीड़ा (बाई आंख) में रहेगी। जातक का कोई काम रुका नहीं रहेगा। दोनों ग्रह की दृष्टि छठे स्थान कुंभ राशि पर होने से जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
2. **सूर्य + मंगल**–जातक मांगलिक होगा। विवाह सुख में विलम्ब होगा।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। द्वादश स्थान में सिंह राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य स्वगृही होगा, फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। बलवान खर्चेश की लग्नेश के साथ की युति जातक को खर्चीले स्वभाव का बनायेगी। जातक राज्य क्षेत्र में उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक धार्मिक यात्राएं, तीर्थाटन, देशाटन करेगा। व्ययेश सूर्य के बारहवें जाने से 'विमल योग' बना, ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–विलम्ब विवाह या विवाह सुख में बाधा होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–भाग्य सुख में बाधा होगी।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के द्वादश स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री और सूर्य स्वगृही होगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। इन दोनों ग्रहों की इस स्थिति से हर्ष योग व सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि धन भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (कुम्भ राशि) एवं भाग्य भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक महाधनी एवं भाग्यशाली होगा तथा ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।

6\. **सूर्य + राहु**–यात्रा अधिक होगी।

7\. **सूर्य + केतु**–तीर्थयात्रा होगी।

❑❑❑

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में

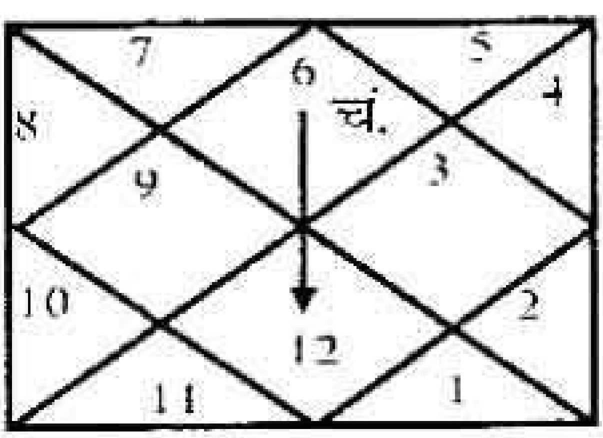

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां चंद्रमा कन्या (शत्रु) राशि में है। पाराशर ऋषि के अनुसार लाभेश लग्न में हो तो जातक को धन, यश, सुख व सम्मान की बराबर प्राप्ति होती रहती है। ऐसा जातक उच्छंखृल व आराम तलब होगा। चंद्रमा केन्द्र में होने से 'यामिनीनाथ योग' बना फलत: चंद्रमा की सकारात्मक शक्ति बढ़ेगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का जनसंपर्क अच्छा होगा। जातक की कल्पना शक्ति उर्वरक होगी।

दृष्टि—लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक की पत्नी पतिव्रता एवं शुभलक्षणा होगी। विवाह के बाद जातक की पारिवारिक स्थिति सुधरेगी।

निशानी—ऐसे जातक के भाग्य एवं जीवन में लगातार परिवर्तन (Ups & Down) आते रहेंगे।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के समय 5 से 7 बजे के मध्य होता है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि

सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक पराक्रमी होगा तथा उसकी पत्नी सुन्दर व स्वामीभक्त होगी।

2. **चंद्र+मंगल**–प्रथम स्थान में कन्या राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (धनु राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक दीर्घजीवी तो होगा पर भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति हेतु सदैव संघर्षशील रहेगा। जातक धनी तो होगा पर धन की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन शुक्र ग्रह की स्थिति से होगा। दशा-मंगल की दशा अन्तर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा जबकि चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा लाभकारी होगी।
3. **चंद्र+बुध**–जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली पर विवादास्पद व्यक्ति होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–कन्यालग्न में यह युति शुभ फलदायक है। भले ही चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। इस गजकेसरी योग का प्रभाव पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को उत्तम संतति सुख मिलेगा। जातक की पत्नी सुन्दर व संस्कार युक्त होगी। जातक का भाग्य बलवान होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–शुक्र यहां नीच का होगा।
6. **चंद्र+शनि**–ऐसा जातक हमेशा चिन्तित रहेगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक उन्मादी व्यक्तित्व का स्वामी होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक विचलित मन मस्तिष्क वाला होगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

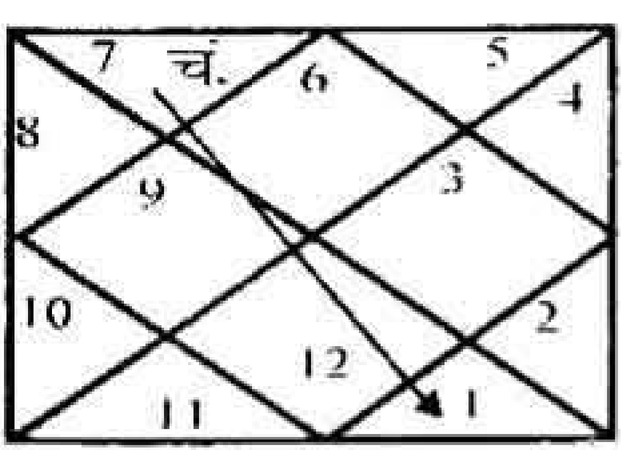

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां द्वितीय स्थान में चंद्रमा तुला (मित्र) राशि में है। पाराशर ऋषि के अनुसार लाभेश धन स्थान में होने से 'महाधनी योग' बनता है। जातक को स्त्रियों से धन की प्राप्ति होगी। जातक बड़े परिवार वाला होगा। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख, संतति सुख, धन-वैभव एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक वाणी के द्वारा भी धन कमा सकता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर रहेगी। जातक लम्बी आयु वाला होगा।

निशानी–जातक को स्त्री मित्र (Female Friend) से लाभ रहेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा–अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा। व्यापार व्यवसाय व नौकरी में लाभ होगा

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के पूर्व 4 से 5 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करता है। यहां दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है।
2. **चंद्र+मंगल**–कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में तुला राशिगत मंगल एवं चंद्रमा दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव में जो कि मंगल के स्वयं का घर है (मेष राशि) पर होगी। फलत: लक्ष्मी योग के साथ जातक दीर्घजीवी होगा। इस योग में जन्मा जातक दो चरणों में धनाढ्य होने की दिशा में आगे बढ़ेगा। प्रथम विवाह के बाद तथा प्रथम संतति के पश्चात् जातक आर्थिक सफलता को प्राप्त करेगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक राजा के संमान ऐश्वर्यशाली पर विवादास्पद होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–यहां यह युति शुभ है। इस 'गजकेसरी योग' का प्रभाव छठे स्थान, आठवें स्थान एवं कुण्डली के दशम स्थान (राज्य भाव) पर पड़ेगा। फलत: जातक की आयु दीर्घ होगी। जातक में ऋण, रोग व शत्रु को नष्ट करने का पूर्ण सामर्थ्य होगा। कोर्ट-कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक महाधनी एवं भाग्यशाली होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक महाधनी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **चंद्र+राहु**–धन के घड़े में छेद होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक को धन प्राप्ति एवं लाभ में बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु

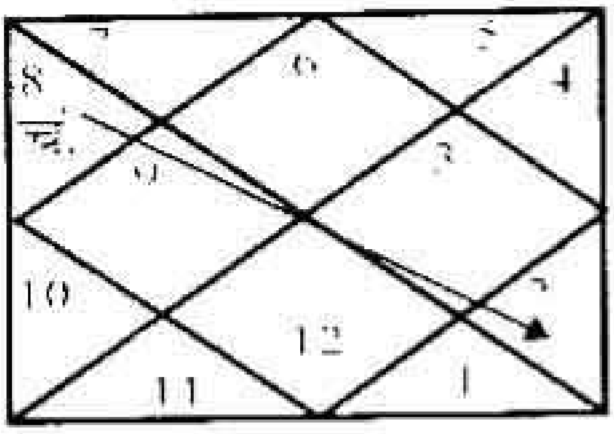

है। जबकि चंद्रमा बुध से वैरभाव नहीं रखता। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा वृश्चिक राशि में नीच का है। वृश्चिक राशि के अंशों में चंद्रमा परमनीच का होता है। ऐसे जातक की उम्र लम्बी होती है। जातक को भाई बहन, स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलता है। जातक कुछ नास्तिक विचारों वाला होता है। जातक के व्यवसाय एवं चरित्र में लगातार परिवर्तन आता रहता है। जातक की पुरातन विद्याओं, धर्म-कर्म, अध्यात्म, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र में रुचि होती है।

दृष्टि–तृतीय स्थान में स्थित चंद्रमा की दृष्टि नवम स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होता है।

निशानी–ऐसे जातक के घर में अकाल मृत्यु नहीं होती। जातक का जन्म परिवार में अकाल मृत्यु रोकता है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। जातक का भाग्योदय भी होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस-पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलतः जातक भाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां तृतीय स्थान में मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (कुंभ राशि), भाग्य भाव (वृष राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। यहां महालक्ष्मी योग बनेगा। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है एवं अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत सक्षम धनी, मानी एवं महान पराक्रमी होता है।
3. **चंद्र+बुध**–जातक की बहनें अधिक होंगी। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–तृतीय स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव, भाग्य भाव एवं लाभ भाव पर होगी। ऐसे जातक का जीवन साथी सुन्दर

होगा। जातक का भाग्योदय छोटी उम्र में होगा। जातक को कोर्ट-कचहरी, राजदरबार में सदैव विजय मिलेगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक के मित्र विश्वासनीय नहीं होंगे।
7. **चंद्र+राहु**–भाईयों में विवाद रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–भाई-बहनों में मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

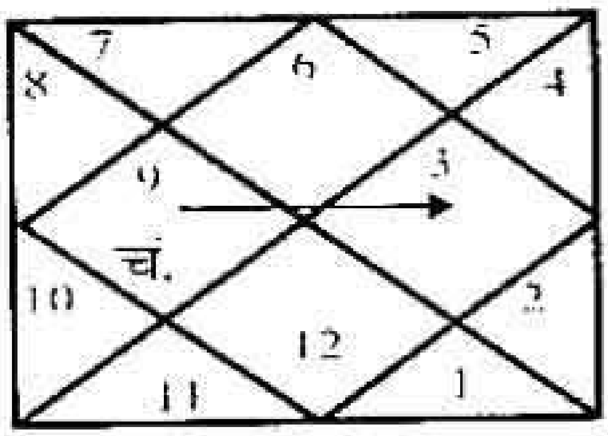

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा धनु (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक का अपना मकान होगा और संबंधियों से उसे सुख मिलता रहेगा। जातक को पैतृक संपत्ति, धन-सम्पत्ति एवं वाहन का सुख मिलेगा। जातक को भौतिक सुख, ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। यहां चंद्रमा के कारण बना 'यामिनीनाथ योग' अधिक सार्थक होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को राज्य पक्ष में, सरकारी नौकरी, व्यवसाय में उन्नति मिलती है।

निशानी–ऐसे व्यक्ति की आमदनी खर्च करने पर बढ़ती रहती है। माता-पिता की सेवा करने पर जातक की विशेष तरक्की होती है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुख, ऐश्वर्य तथा उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म पौषकृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलतः जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के पास वाहन भी होगा पर वाहन दुर्घटना से विकलांग होने का भय रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत चंद्र, मंगल केन्द्रवर्ती होंगे। मंगल यहां दिक्बली होगा एवं चंद्रमा के कारण यामिनीनाथ योग बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (मीन राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं एकादश भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। फलतः इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक की आर्थिक स्थिति में सम्पन्नता विवाह के बाद आयेगी। जातक व्यापार, व्यवसाय एवं राजनीति में भी प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **चंद्र+बुध**–जातक की माता बीमार रहेगी।

4. **चंद्र+गुरु**–यहां गुरु+चंद्र की युति हंस योग, कुलदीपक योग, केसरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेंगे। यह गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह अष्टम भाव, राज्य भाव एवं द्वादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक की आयु बढ़ेगी। कोर्ट-कचहरी में आपका दबदबा रहेगा। यात्राओं से लाभ होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक भाग्यशाली होगा तथा परिवार का नाम रोशन करेगा।

6. **चंद्र+शनि**–जातक की माता बीमार होगी।

7. **चंद्र+राहु**–जातक की माता की मृत्यु जल्दी होगी।

8. **चंद्र+केतु**–जातक का वाहन दुर्घटनाग्रस्त होगा।

कन्यालग्न में चन्द्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

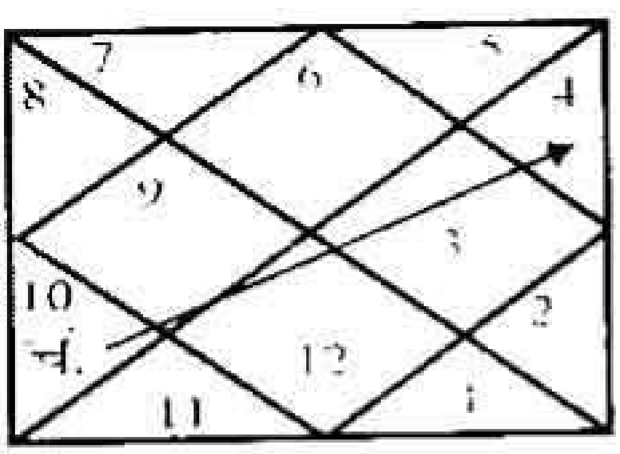

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां पंचम स्थान में चंद्रमा मकर (सम) राशि में है। ऐसे जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। उसे शैक्षणिक डिग्री मिलती है। उसे भूमि, कीमती पत्थर (रत्न) की प्राप्ति होती है। जातक विनम्र, विद्वान् एवं ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला शत्रुहीन होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी जो चंद्रमा का स्वयं का घर है। जातक को राज्य सेवा में रहने का अवसर मिलेगा। जातक एक प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

निशानी–ऐसे व्यक्ति के जन्म के बाद जातक के परिवार की उन्नति होती है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक की शिक्षा पूर्ण होगी। जातक को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। जातक को रोजी-रोटी व्यवसाय में उत्तम अवसर प्राप्त होंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **चंद्र+सूर्य**-कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि) को देखेंगे जो चंद्रमा का स्वयं का घर है। ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा परन्तु एकाध संतति का क्षरण, अकाल मृत्यु, गर्भपात संभव है।
2. **चंद्र+मंगल**-यहां पंचम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मेष राशि), लाभ भाव (कर्क राशि) एवं व्यय भाव (सिंह राशि) को देखेंगे। यहां 'लक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा परन्तु जातक उदार मनोवृत्ति (खर्चीली प्रवृत्ति) का होगा।
3. **चंद्र+बुध**-जातक प्रजावान होगा। दो कन्याएं अवश्य होगी।
4. **चंद्र+गुरु**-पंचम स्थान में नीचस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होगा। जातक की व्यापार-व्यवसाय में उन्नति, जीवन में सर्वांगीण विकास होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**-कन्याएं अधिक होंगी। जातक की संतान भाग्यशाली होगी।
6. **चंद्र+शनि**-जातक की कन्याएं अधिक होंगी।
7. **चंद्र+राहु**-जातक को संतान प्राप्ति में बाधा आयेगी।
8. **चंद्र+केतु**-गर्भपात या गर्भस्राव होगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में

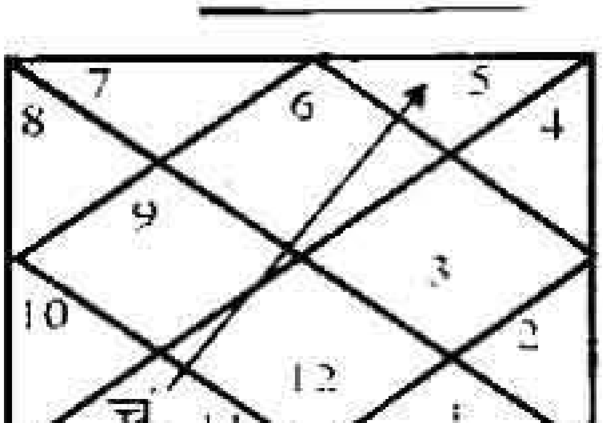

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैरभाव नहीं रखता। यहां छठे स्थान में चंद्रमा कुम्भ

(सम) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति के कारण 'लाभ भंग योग' बनेगा। इससे बालारिष्ट योग एवं बचपन में स्वास्थ्य खराब होने का संकेत मिलता है। ऐसा जातक एकाग्रचित्त होकर अपनी समस्याओं व शत्रुओं के बारे में विचार करके महत्वपूर्ण निर्णय लेता है। जातक को युवावस्था में व्यापार-व्यवसाय हेतु संघर्ष करना पड़ता है।

दृष्टि—छठे भावगत चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक धन संग्रह के प्रति लापरवाह रहता है।

निशानी—ऐसे जातक को रात्रि में दूध पीने या बासी खाना खाने पर 'विष भोजन' का भय रहता है। जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होते हैं पर वह उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी। उन्नति होगी पर उन्नति के साथ कोई न-कोई चिंता लगी रहेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या रात्रि 8 बजे के आस-पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। चंद्रमा छठे जाने से लाभभंग योग बना परन्तु व्ययेश सूर्य के छठे जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। फलतः आर्थिक तंगी रहेगी। खर्च की अधिकता जातक को परेशानी करती रहेगी। जातक की आर्थिक स्थिति का सही मूल्यांकन शुक्र की स्थिति से होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां छठे स्थान में कुंभ राशिगत मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। चंद्रमा के कारण 'लाभभंग योग' भी बनेगा, परन्तु षष्टमेश मंगल के छठे स्थान में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एवं लग्न भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा पर 'लक्ष्मी योग' के कारण धन की आवक बनी रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा उसे धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी।
3. **चंद्र+बुध**—मेहनत का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—यहां चंद्रमा व बृहस्पति के कारण 'सुखभंग योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'लाभभंग योग' बनेगा। फलतः जातक के पराक्रम में कमी आयेगी। खर्चे बढ़ चढ़ कर होंगे। राज्य पक्ष से धोखा होगा। जातक को विवाह सुख में बाधा

आयेगी। जातक का कोई काम इस योग के कारण रुका हुआ नहीं रहेगा। संघर्ष के बाद अंतिम सफलता निश्चित है।

5. **चंद्र+शुक्र**–भाग्योदय में बाधा आयेगी।
6. **चंद्र+शनि**–संतान विलम्ब से होगी।
7. **चंद्र+राहु**–जातक के गुप्त शत्रु होंगे।
8. **चंद्र+केतु**–जातक के मित्र षड्यंत्रकारी होंगे।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में

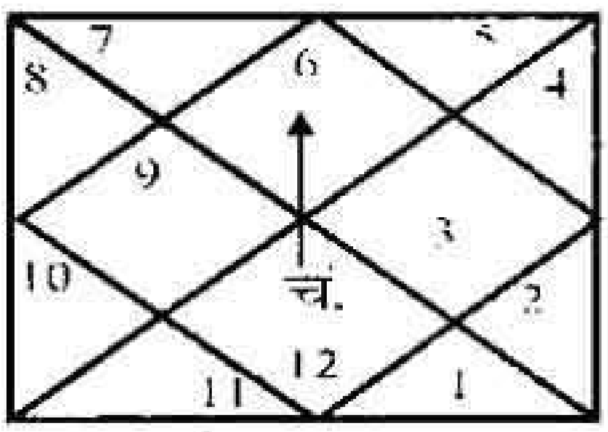

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां सप्तम स्थान में चंद्रमा (मीन) मित्र राशि में है। ऐसा जातक कामुक प्रवृत्ति प्रधान होगा। जातक की पत्नी सुन्दर, सुशील भावुक व मांसल होगी पर जातक अन्य स्त्रियों में ज्यादा रुचि लेगा। जातक दूसरों से आसानी से ईर्ष्या करने लगेगा। पति-पत्नी में प्रेम रहेगा। गृहस्थ सुख, परिवार-संतान सुख मध्यम रहेगा। जातक समाज का प्रिय व्यक्ति होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक जिस कार्य को हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी।

निशानी–ऐसे जातक की युवावस्था में मां की मृत्यु हो जाती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होती है। जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां सातवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को सायंकाल सूर्यास्त के समय होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि) को देखेंगे। फलत: जातक उन्नति मार्ग की ओर बढ़ेगा। जातक की पत्नी सुंदर होगी पर झगड़ालू स्वभाव की होगी।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में केन्द्रस्थ होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक धनी होगा। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। जातक का राज्य सरकार व राजनीति में दवदबा होगा। जातक समाज का धनी, मानी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक भाग्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होने के कारण कुलदीपक योग, हंस योग, केसरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेंगे। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक का जीवनसाथी सुयोग्य व सुन्दर होगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक का पराक्रम राजातुल्य होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–मालव्य योग के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
6. **चंद्र+शनि**–पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव हैं।
7. **चंद्र+राहु**–जातक का पत्नी से विवाद रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव हैं।

कन्यालग्न में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

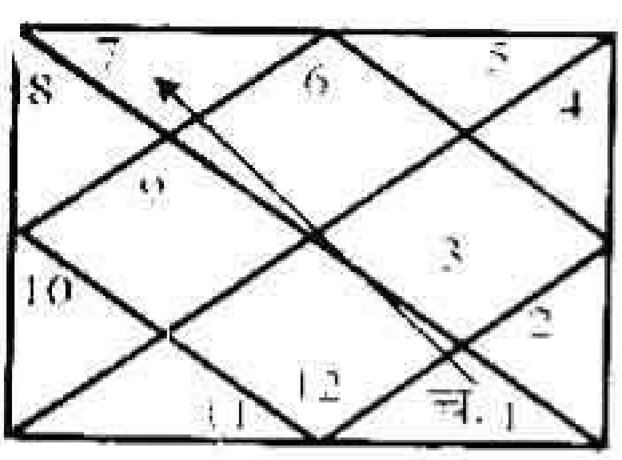

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मेष (मित्र) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति में 'लाभभंग योग' बनता है। इससे बालारिष्ट योग एवं बचपन में स्वास्थ्य खराब होने का संकेत मिलता है। परन्तु चंद्रमा मेष में होने के कारण अपनी ऊर्जा नहीं खोता। ऐसा जातक अपनी किस्मत आप बनाने वाला परम यशस्वी होता है। जातक का शरीर पतला एवं आंखें कमजोर होंगी। जातक का मन कभी अचानक विचलित होने से कई बार आत्मविश्वास की कमी महसूस होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा। धन प्राप्ति के प्रयास हेतु जातक को कठोर परिश्रम करना होगा पर सफलता अवश्य मिलेगी। आर्थिक सम्पन्नता धनेश शुक्र की स्थिति पर निर्भर है।

निशानी–ऐसे जातक की बाल्यावस्था में माता की मृत्यु संभव है। जातक को पसीना ज्यादा आयेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सायंकाल चार बजे के लगभग होगा। सूर्य यहां उच्च का होगा। व्ययेश सूर्य के आठवें जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनता है। जबकि चंद्रमा लाभभंग योग की सृष्टि करता है। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है। जातक दीर्घजीवी होता है पर व्यापार में नुकसान उठाता है। दोनों ग्रहों की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक धनी व समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। जहां मंगल स्वगृही होगा। मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा तथा चंद्रमा के कारण 'लाभभंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश के अष्टम भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ भवन (कर्क राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक व्यापार–व्यवसाय के द्वारा यथेष्ट धन कमायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–यहां गुरु+चंद्र की इस स्थिति के कारण 'सुखभंग योग, विवाहभंग योग एवं लाभभंग योग' बनेगा। फलत: जातक के जीवन में धन की बचत नहीं होगी तथा उसके गृहस्थ जीवन में कलह रहेगी। फिर भी जीवन की गाड़ी पार लग जायेगी। जातक का कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक आर्थिक रूप में सदैव संकट ग्रस्त रहेगा। जातक भाग्यहीन होगा क्योंकि शुक्र के कारण 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यभंग योग' बनेगा।
6. **चंद्र+शनि**–शनि के कारण विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–राहु यहां दुर्घटना को आमंत्रित करता है।
8. **चंद्र+केतु**–केतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

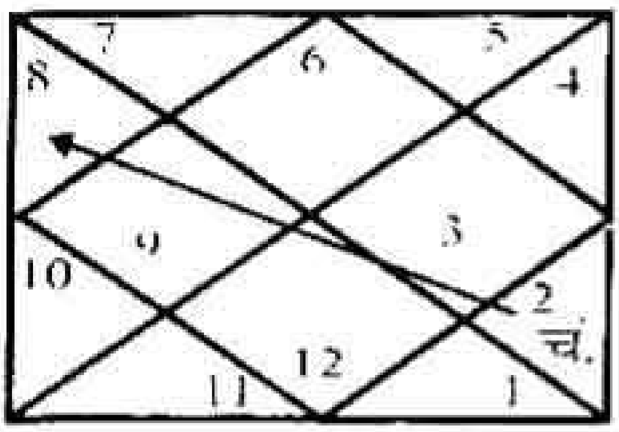

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां नवम स्थान में चंद्रमा उच्च का है। वृष राशि के अंशों में चंद्रमा परमोच्च का होता है फलत: जातक की विद्या पूर्ण होगी, जातक दूरदर्शी होगा। जातक को उच्च शिक्षा (Higher Educational Degree) की उपाधि मिलेगी। जातक सौभाग्यशाली होगा, उसे सर्वत्र प्रसिद्धि व सफलता मिलेगी। जातक को सामाजिक व राजनैतिक योजनाओं में सफलता मिलेगी। जातक को सरकार से सम्मान मिलेगा।

दृष्टि–नवमस्थ चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी फलत: जातक महान पराक्रमी होगा।

निशानी–जातक 'शरणागत वत्सल' होगा। जातक अपनी शरण में आये व्यक्ति की जान देकर भी रक्षा करेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक का परम भाग्योदय होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय या नौकरी से धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर दो बजे के आस-पास होगा। यहां बैठे दोनों ग्रह पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली एवं प्रबल पराक्रमी होगा। यहां चंद्रमा उच्च का होने से 'चंद्रकृत राजयोग' बनेगा। ऐसे जातक को मित्रों एवं व्यापारी वर्गीय लोगों से लाभ होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। जहां चंद्रमा उच्च का होगा फलत: महालक्ष्मीयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलत: जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति

होगी। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा। एवं उदार मनोवृत्ति (खर्चीले स्वभाव) का व्यक्ति होगा।

3. **चंद्र+बुध**–जातक प्रबल भाग्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–चंद्रमा यहां उच्च का होकर, बृहस्पति के साथ लग्न स्थान, पराक्रम भाव एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को पिता की सम्पत्ति एवं परिजनों का प्रेम मिलेगा। जातक की संतान पढ़ी-लिखी व सुशील होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–यहां शुक्र स्वगृही एवं चंद्रमा उच्च का होने से 'किम्बहुना' नामक राजयोग बनेगा। जातक राजा या राजमंत्री से कम नहीं होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक पराक्रमी एवं भाग्यशाली होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक राजा होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक का भाग्योदय संघर्षपूर्ण होगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

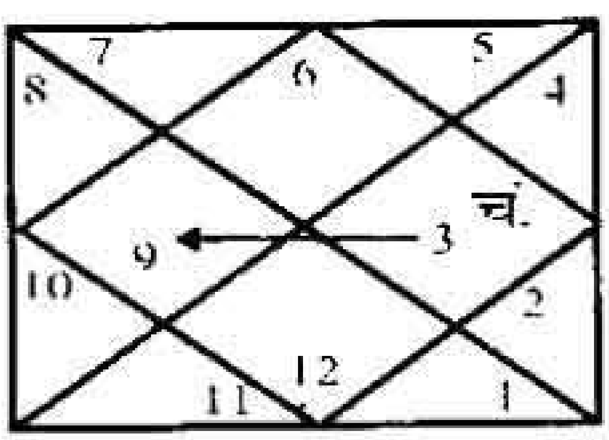

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां दशम स्थान में चंद्रमा मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता, नौकरी, व्यापार, व्यवसाय में लाभ होगा। जातक तीव्र बुद्धि वाला एवं बहादुर होगा। जातक अमीर होगा एवं सुन्दर आभूषणों से युक्त स्त्री का स्वामी होगा। जातक कला-कुशल होगा। सरकारी क्षेत्र में जातक का प्रभाव होगा।

दृष्टि–दशम स्थान गत चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को माता-पिता एवं वाहन का सुख पूर्ण मिलेगा।

निशानी–घर में दुधारू पशु या दूध वाले वृक्ष या एकाधिक वाहन होंगे।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को नौकरी, व्यवसाय व व्यापार में लाभ होगा। जातक को धन की प्राप्ति भी होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ

निरर्थक युति है। यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या दोपहर 12 बजे के आस-पास होता है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को माता-पिता की आंशिक सम्पत्ति मिलती है। जातक का सरकार में, राजनीति में दबदबा रहता है।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होकर लग्न स्थान (कन्या राशि), चतुर्थ स्थान (धनु राशि) एवं पंचम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। मंगल यहां दिक्बल को प्राप्त करके अपनी उच्च राशि को देखेगा। चंद्रमा यहां 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। फलत: 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ। ऐसा जातक धनवान होगा तथा उसे जीवन में सभी भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक अच्छी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक की आर्थिक उन्नति सही अर्थों में प्रथम संतति के बाद होती है।
3. **चंद्र+बुध**–जातक राजा होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–दशम भाव में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां पर केसरी योग, कुलदीपक योग एवं यामिनीनाथ योग बनेगा। दोनों ग्रह धन स्थान, सुख स्थान एवं अष्टम भाव को देखेंगे। फलत: राज्य पक्ष, कोर्ट-कचहरी में दबदबा रहेगा। जातक को निर्बाध गति से धन प्राप्ति होती रहेगी एवं सुख प्राप्ति के संसाधन मिलते रहेंगे। जातक को वाहन की प्राप्ति 24 व 32 वर्ष की आयु में होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक भाग्यशाली होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक का राजनीति में वर्चस्व होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक महान पराक्रमी राजा होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक को राज्यपक्ष से बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में

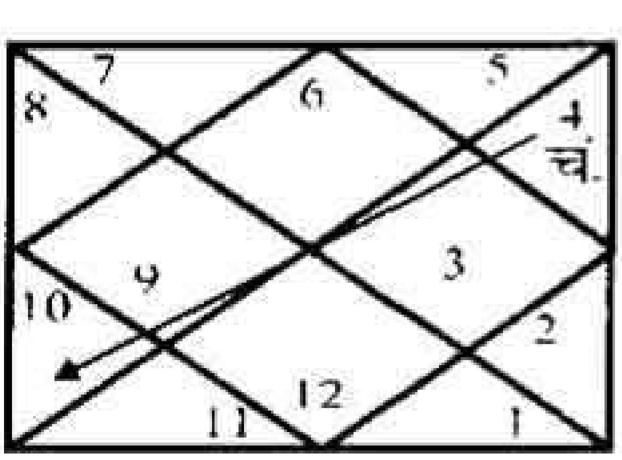

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां एकादश स्थान में चंद्रमा कर्क राशि में स्वगृही होगा। ऐसे जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक को धन-सम्पत्ति, वैभव, ऐश्वर्य, माता और ज्येष्ठ

भाई का सुख मिलेगा। जातक स्वभाव से शांतिप्रिय होता है। जातक के पास काफी भू-सम्पत्ति एवं बैंक बैलेंस (Bank balance) होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री (Higher Education-Degree) मिलेगी।

निशानी–जातक की कन्या संतति अधिक होगी। जातक को स्त्री मित्र (Female Friend) से लाभ होगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनी होगा। उसके हाथ में ली गई महत्वकांक्षी योजनाएं सफल होंगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म श्रावणकृष्ण अमावस्या को सुबह दस बजे के आस-पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव मकर राशि को देखेंगे। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। ऐसा जातक पढ़ा-लिखा होता है। उसे पुत्र-पुत्री दोनों की प्राप्ति होती है। जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। कर्क में जहां चंद्रमा स्वगृही होगा वहीं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलत: यहां 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (तुला राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं छठे भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक अपने शत्रुओं का मान भंग करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद ही होगी।
3. **चंद्र+बुध**–जातक उद्योगपति होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–बृहस्पति यहां उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होगा। किम्बहुना योग के साथ ये दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को देखेंगे। फलत: जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक छोटे भाई-बहनों, पुत्र-पुत्रियों पर धन खर्च करेगा तथा परिजनों से प्रेम करेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक विद्यावान होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।